गवर्नर जेनरल सिपाहियों का काम करता था। चौथी मई को
१७९९ ई० क़िले पर हमला हुआ। और अंगरेज़ी निशान फहराया। टीपू की लाश हाथ लगी लड़के उस के हाज़िर हो गये ६२६ तोप एक लाख बंदूक़ साज़ सामान समेत और एक करोड़ एक लाख के क़रीब नक़द और जवाहिर अंगरेज़ों के हाथ लगा। क़ाइदे के मुताबिक़ टीपू का सारा मुल्क सर्कार और नव्वाब के दर्मियान बट जाना चाहिये था। लेकिन गवर्नर जेनरल ने मुनासिब न समझा कि नव्वाब की अमलदारी ज़ियादा बढ़ाई जाय इसी लिये कुछ तो आपस में बांट लिया। और बाक़ी मैसूर के पुराने राजा के वारिसों में से जिसे हैदरअली ने वहां से बेदख़ल कर दिया था चुन कर उस के हवाले किया। और शर्त यह कर ली कि हिफ़ाज़त के लिये फ़ौज उस में सर्कारी रहेगी ख़र्च सात लाख साल ज़िम्मे राजा के। और जब ज़रूरत पड़े तो इंतिज़ाम भी मुल्क का सर्कार अपने तौर पर करे।

तंजोर का राजा तुलजाजी लावलद होने के सबब एक दस बरस के लड़के सर्वोजी को गोद ले कर मर गया था उस के
१८०० ई० भाई अमरसिंह ने गद्दी का दावा किया। सर्कार ने बहुत तहक़ीक़ात के बाद गद्दी सर्वोजी को दी लेकिन मुल्क की आमदनी से उस के लिये एक अच्छा सा पिंशन मुक़र्रर करके दीवानी फ़ौजदारी का इख़तियार आप ले लिया।

सूरत के नव्वाब के मरने पर यही हाल वहां का भी हुआ और कर्नाटक के नव्वाब उमदतुलउमरा के मरने पर जब उस के बेटे अलीहुसेन ने इन शर्तों से इंकार किया। तो उस के
१८०१ ई० चचेरे भाई अज़ीमुद्दौला को इन्हीं शर्तों पर नव्वाब बना दिया।

वज़ीरअली अवध से निकाल कर बनारस में रक्खा गया था। जब मालूम हुआ कि काबुल के बादशाह ज़मांशाह से ख़त किताबत रखता है और फ़साद उठाया चाहता है तो उसे कलकत्ते आने का हुक्म मिला। वह इस बात से जल कर एक दिन सुबह को चेरी साहिब अजंट के यहां जब चाय पीने को गया। बातों ही बातों में उन्हें काट डाला। कप्तान कानबे साहिब

और चेहम साहिब को भी क़तल किया । फिर वहां से झपट कर डेविस साहिब जज की कोठी * पर पहुंचा ॥ यह कोठी दुमंज़िली है साहिब एक बर्छा ले कर इस जवांमर्दी से सीढ़ी पर आ खड़े हुए कि कोई क़दम न बढ़ा सका । इसी अर्से में फ़ौज आ गयी डेविस साहिब बच गये वज़ीरअली भागा जयपुर चला गया ॥ वहां के राजा ने उसे पकड़ कर अंगरेज़ों के हवाले कर दिया । लेकिन इतना क़रार कर लिया ॥ कि न वह मारा जावे न उस के पैर में बेड़ी डाली जावे । अंगरेज़ों ने उसे कलकत्ते ले जा कर क़िले में ऐसी एक कोठरी के अंदर क़ैद किया कि उस को पिंजरा ही कहना चाहिये † ॥

सआदतअलीख़ां फ़ौजख़र्च न अदा कर सका इसी लिये सर्कार ने फ़ौजख़र्च के बदले दुआबे का मुल्क और रुहेलखण्ड उस से ले लिया । नया अहदनामा लिखा गया कि नव्वाब रज़ीडंट की सलाह मुताबिक़ अपने मुल्क का इंतिज़ाम दुरुस्त करे और इस इंतिज़ाम से फ़र्रुख़ाबाद का नव्वाब भी सर्कारी पिंशनदार बन गया ॥

टीपू पर फ़तह पाने के इनआम में गवर्नर जेनरल को मार्क्विस का ख़िताब मिला इसी अर्से में फ़रासीसियों के हमले से मिसर को १८०२ ई०
बचाने के लिये गोरों के साथ कुछ हिंदुस्तानी फ़ौज भी यहां से जहाज़ों पर भेजी गयी । और बड़ा नाम पैदा कर आयी ॥

पेशवा अब तक गवर्नर जेनरल के कहने से बाहर रहा था लेकिन जब जसवंतराव हुल्कर ने बड़ी धूम धाम से उस पर चढ़ाई की तो उस ने घबरा कर गवर्नर जेनरल के कहने बमूजिब इस बात का अहदनामा लिख दिया कि किसी क़दर (६०००) सर्कारी फ़ौज उस के मुल्क में रहा करे । और उस का

---

* यह वही कोठी है जो अब महाराजाधिराज काशी नरेश बहादुर की है और नंदेसर की कहलाती है ॥

† सन् १८५२ ई० में हमने देखी थी लेकिन अब कुछ तोड़ फोड़ होकर नयी इमारत बन जाने के सबब पता जाता रहा हम जो क़िले में गये कोई बतला न सका ॥

ख़र्च उसी के मुल्क से लिया जावे। इधर तो यह अहदनामा लिखा गया। उधर पूना के बाहर हुल्कर से शिकस्त खाकर पेशवा को समुद्र की तरफ़ भागना पड़ा। अंगरेज़ों ने उसे अपने जहाज़ में पनाह दी और फिर बहुत सी फ़ौज इकट्ठा कर के
१८०३ ई० पूना में पहुंचाया। हुल्कर ने सर्कारी सिपाह का मुक़ाबला न किया अपने मुल्क को चला आया। गवर्नर जेनरल ने बहुतेरा चाहा कि पेशवा की तरह सेंधिया और बराड़ यानी नागपुर के राजा से भी अहदनामे हो जावें लेकिन जब देखा कि यह लोग सीधी तरह से न मानेंगे तो अपने भाई जेनरल विलिज़्ली को जो फिर पीछे से ऐसा नामी इंगलिस्तान का कमांडर इन्चीफ़ ड्यूक आफ़ वलिङ्गटन हुआ दखन से और लार्ड लेक कमांडरइन् चीफ़ को उत्तर से इन दोनों के मुल्क पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया दखन में अहमदनगर सर्कारी फ़ौज के हाथ आजाने से गोदावरी पार सेंधिया का बिल्कुल अमल जाता रहा। और उसी महीने में भड़ौंच भी सर्कार के क़ब्ज़े में आ गया। इधर लार्ड लेक ने क़न्नौज से कूच कर के अलीगढ़ में सेंधिया की फ़ौज को जो पीरन साहिब फ़रासीसी के तहत में थी शिकस्त देकर दिल्ली की तरफ़ क़दम बढ़ाया। पीरन सेंधिया की नौकरी छोड़ कर अंगरेज़ों की हिमायत में चला आया। दिल्ली में भी सेंधिया की फ़ौज एक फ़रासीसी के तहत में लड़ी। और तीन हज़ार आदमी काम आने के बाद खेत छोड़ भागी। यहां लार्ड लेक ने नाम के बादशाह अंधे शाहआलम से मुलाक़ात की वह एक कटे पुराने छोटे से शामियाने के नीचे बैठा था। लार्ड लेक को बहुत लंबा चौड़ा ख़िताब इनायत किया और उस बेचारे के पास देने को बाक़ी क्या रहा था। निदान कर्नल अकटरलोनी साहिब को जिन्हें अक्सर यहां वाले लोनी अख़्तर भी कहते हैं कुछ सिपाहियों के साथ दिल्ली में छोड़ कर लार्ड लेक ने आगरा मरहठों से जा लिया और फिर लसवारी * में पहुंच कर मरहठों की फ़ौज

* या, लेसवाडी आगरे से ७२ मील वायुकोन है।

को ऐसी भारी शिकस्त दी। कि सात हज़ार मारे गये और दो हज़ार क़ैद में आये गोया सेंधिया की कमर तोड़ डाली॥ उधर दखन में सर्कारी फ़ौज ने अहमदनगर लेने के बाद असाई की लड़ाई में मरहठों को बड़ी भारी शिकस्त देकर बुर्हानपुर और असीरगढ़ का मशहूर क़िला ले लिया। और फिर अरगाव की लड़ाई जीत कर और गाविलगढ़ का मज़बूत क़िला क़ब्ज़े में लाकर नागपुर के राजा को बाई को पचा दिया॥ निदान नागपुर के राजा ने कटक का इलाक़ा दे कर सर्कार से सुलह कर ली और साथ ही सेंधिया ने भी अहमदनगर और भड़ोंच से दस्तबर्दार हो कर अहदनामा लिख दिया कि फिर कभी किसी फ़रासीसी को नौकर न रक्खे। पेशवा को बुंदेलखंड पर दावा था इस लिये सर्कार ने वह इलाक़े जो दखन और गुजरात में उस से पाये थे बुंदेलखंड के बदल उसे लौटा दिये॥

अब ख़ाली एक जसवंतराव हुल्कर इंदौर का राजा बाक़ी १८०४ ई०
रह गया। कि जिस ने सर्कार के सामने सिर नहीं झुकाया॥ वह अक्सर सर्कारी इलाक़ों को लूटा किया। और कोई वकील भी अपनी तरफ़ से नहीं भेजा॥ इस लिये उस पर चढ़ाई हुई पहले कुछ थोड़े से सिपाही कर्नेल मानसन साहिब के तहत में उस के मुक़ाबले को गये और टोंक का क़िला दर्वाज़ा उड़ा कर फ़तह कर लिया लेकिन मुकंदरे के घाटे में यह सर्कारी फ़ौज का टुकड़ा धोखे में आ कर बेतरह हुल्कर की फ़ौज से घिर गया। और बड़ी बड़ी मुश्किलों से वहां से निकल कर लड़ता भिड़ता गर्मी और बरसात के सबब सैकड़ों तकलीफ़ें उठाता और नुक़सान सहता तीन तेरह हो कर आगरे पहुंचा॥ हुल्कर ख़ूब फूला। अब उस की शेख़ी का क्या ठिकाना था॥ समझा कि जो चूं। मैं ही हूं॥ बीस हज़ार सिपाह और एक सौ तीस तोपों से दिल्ली का शहर जा घेरा वहां सर्कारी फ़ौज कुल आठ सौ थी और तीस ग्यारह पर दिल्ली के रज़ीडंट अकुरलोनी ने इसी मुट्ठी भर फ़ौज से ख़ूब मरहठों के दांत खट्टे किये। तीन दिन सिर पटक कर आख़िर चल दिये॥

हुल्कर की बहादुरी भागने में थी नाम ही इन का मरहठा है। यानी मारना और हट जाना किसी ने हुल्कर से पूछा था कि आप का राज कहां है जिसके छीनने का हम उपाय करें उसने जवाब दिया कि उतनी ज़मीन जिस पर मेरे घोड़े का साया पड़ता है। अगर मक़दूर हो। आओ छीन लो। निदान लेक तो इस आर्ज में था कि किसी तरह उस से दो चार हो तो फिर तमाशा दिखला दे। और वह इस के नाम से हवा होता था यहां वाले अक्सर अपनी बेवक़ूफ़ी से इस भगोड़े लुटेरे को वीर समझ कर जीते जी मन्नत की दहेड़ियां चढ़ाने लगे थे। एक दिन लेक ने चौबीस घंटे में तीस कोस का धावा मार कर फ़र्रुख़ाबाद के पास इसे जा दबाया। और उस लड़ाई में कम से कम तीन हज़ार आदमी उस के मारे गये लेकिन वह हाथ न लगा डीग की तरफ़ भाग गया। डीग भरतपुर की अमलदारी में है भरतपुर के जाट राजा सूरजमल के बेटे रंजीतसिंह ने हुल्कर को पनाह दी। इस क़सूर की उसे भी सज़ा दीजानी मुनासिब समझी गयी। डीग का क़िला लेक ने फ़तह कर लिया। और जो कुछ उस में था अपनी फ़ौज को बांट दिया।

१८०५ ई० तीसरी जनवरी को लेक ने भरतपुर घेरा। नवीं को हमला किया। लेकिन जब ख़ंदक़ के कनारे पहुंचे। तो मालूम हुआ कि पानी छाती भर गहरा है आदमी बहुत काम आये। इक्कीसवीं को दूसरी तरफ़ से हमला किया लेकिन वहां ख़ंदक़ चौड़ी इतनी थी कि पुल जो बना लाये थे छोटा पड़ा। और जब सीढ़ी जोड़ कर बढ़ाना चाहा पानी में गिर पड़ा। इस में भी बहुत आदमी काम आये बाईसवीं को तीसरी तरफ़ से हमला किया हिंदुस्तानी सिपाही ख़ंदक़ पार हो कर दीवार पर चढ़ गये। लेकिन गोरों ने उस वक़्त साथ देने से इन्कार किया इस लिये उन्हें भी लौट आना पड़ा ८४ आदमी खेत रहे। दूसरे दिन लेक ने उन गोरों को जिन्हों ने उदूलहुक्मी की थी बहुत शर्मंदा किया उन्हों ने ग़ैरत में आकर बड़े ज़ोर शोर से धावा

हमला किया लेकिन इस अर्से में क़िलेवालों ने बुर्ज और दीवार की मरम्मत कर ली थी। राह न मिली॥ हज़ार से ऊपर आदमी मारे गये। निदान इन चार हमलों में तीन हज़ार से ऊपर सर्कारी फ़ौज का नुक़सान हुआ लोग थके मांदे और बे दिल हो गये॥ गोला बारूद भी बाक़ी न रहा। रसद का सामान ख़र्च में आ गया॥ नाचार लेक को फ़ौज हटानी पड़ी। यह इस मुल्क में एक ही क़िला है कि जिस के सामने से किसी सबब से भी कभी सर्कारी फ़ौज हटी॥ हम ने भरतपुरवालों की ज़ुबानी सुना है कि लड़ाई के वक़्त यह राजा रंजीतसिंह दोहर ओढ़े और हाथ में लट्ठ लिये क़िले की दीवारों पर घूमता था और गोलंदाज़ और सिपाहियों से यही कहता रहता कि भाई "क़िल्ला तिहारो ही है" और जब वे कहते कि आप यहां से हट जायें गोले ओले की तरह बरस रहे हैं तो जवाब देता कि "भय्या जाके नाम की चीठी भगवान के घर तें वा में बंधी आवतु है वाही को गोला लगतु है" और जब सुना कि लेक ने फ़ौज हटा ली। बड़ी दूरंदेशी की अपने सब सर्दारों को जमा कर के कहा कि भाइयो यह हम सब की ताक़त न थी कि अंगरेज़ों को हटा सकें यह निरी ईश्वर की कृपा है कि मेरी बात रह गयी॥ पर अब मुनासिब यह है कि हुल्कर से कह दो किसी तरफ़ की राह ले मेरा बूता नहीं कि अंगरेज़ों के दुश्मन को पनाह दूं और अपने लड़के कुंवर रणधीरसिंह को क़िले की कुंजी दे कर लेक के पास भेज दिया लेक ने भरतपुरवालों की बड़ी ख़ातिदारी की राजा ने बीस लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च अदा करने का वादा किया। लेक ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिया॥

लार्ड विलिज़्ली के इस भारी मंसूबे की क़दर कि हिंदुस्तानी फ़सादी रईसों को ज़ेर कर के यकबारगी झगड़े फ़साद की जड़ मिटा दे। और सारे मुल्क में अमन चैन जमा दे॥ इंगलिस्तान में न हुई कम्पनी के शरीक आख़िर सौदागर थे। लड़ाई के ख़र्च से घबरा गये॥ इस बड़े नामी गवर्नर जेनरल

का इस्तीफ़ा मंज़ूर कर लिया। और लार्ड कार्नवालिस को जो सन् १७९३ में इस उहदे से इस्तीफ़ा दे कर गया था फिर गवर्नर जेनरल मुक़र्रर कर के कलकत्ते को रवाना किया ॥ लार्ड कार्नवालिस की राय मार्क्विस विलिज़्ली से बिल्कुल बख़िलाफ़ थी। बल्कि हम तो यही कहेंगे कि उस मालिक पैदा करनेवाले की राय के भी बख़िलाफ़ थी ॥ क्योंकि मार्क्विस विलिज़्ली तो यहां के इन फ़सादी रईसों को ज़ेर कर के अखण्ड राज अपनी सर्कार का जमाना चाहता था। और लार्ड कार्नवालिस इन्हें बचाना बल्कि अक्सर इलाक़े जो सर्कारी तहत में आगये थे उन को भी लौटा देना ॥ कौन जाने यही सबब था कि तीसवीं जुलाई को तो वह कलकत्ते में पहुंचा। और पांचवीं अकतूबर को ग़ाज़ीपुर में इस दुन्या से चल बसा ॥ मक़बरा इस का वहां देखने लाइक़ है सर जार्ज बार्लो जो उस वक़्त कौंसल के अव्वल मिम्बर थे गवर्नर जेनरल के उहदे का काम अंजाम देने लगे। और वही फिर उस उहदे पर बोर्ड आफ़ कंट्रोल की मंज़ूरी से मुक़र्रर हुए ॥

सेंधिया से फ़ौरन सुलह हो गयी और हुल्कर से पंजाब में ब्यासा के कनारे जहां वह सिक्खों से मदद लेने को गया था अहदनामा लिखवा लिया। जयपुर और बूंदी पर से कि वहां के राजा सर्कार के वफ़ादार दोस्त थे हिफ़ाज़त का हाथ बिल्कुल खींच लिया और मरहठों का गोया इन्हें शिकार बना दिया ॥ जयपुर के वकील ने ख़ूब कहा था। कि "सर्कार ने अपना ईमान अपनी ज़ुरूरत के ताबे कर लिया ॥

१८०६ ई० इसी अर्से में कहीं मंदराज के कमांडरइन्चीफ़ ने कोई हुक्म इस ढब का जारी कर दिया था कि पल्टन के सिपाही परेड पर कान में बाली पहन कर या माथे में तिलक लगाकर न आया करें। और पोशाक भी कुछ नये क़िस्म की पहनें ॥ सिपाहियों ने यह झूठा शुबहा करके कि सर्कार को हमारे धर्म्म में दख़ल देना मंज़ूर है विल्लूर के क़िले में जहां टीपू का घर बार नज़रबन्द रक्खा गया था। अंगरेज़ी अफ़सर और गोरों पर

यकायक हमला कर दिया। लेकिन जब कर्नल जिलस्पी अरकाट से हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ी रिसालों के सवार और तोपें लेकर विल्लूर में पहुंचा सिपाही कोई ४०० तो मारे गये। और बाक़ी कुछ क़ैद हुए और कुछ मुआफ़ कर दिये गये। दोनों पल्टनों का नाम जिनके सिपाहियों ने यह बलवा किया था फ़ौज की फ़िहरिस्त से कट गया। बाज़े ऐसा भी गुमान करते हैं कि इस में टीपू सुल्तान के घरवालों की साज़िश थी पर सुबूत नहीं मिला। जो हो टीपू के घरवाले नज़रबन्द रहने को कलकत्ते भेजे गये और उनके पिंशन घटाये गये। मंदराज के गवर्नर लार्डविलियमबेंटिंक जिसे यहां वाले लार्डबेंटिक कहते हैं और कमांडर इनचीफ़ की बदनामी हुई दोनों विलायत चले गये *॥

लार्ड मिन्टो

आख़िर जुलाई सन् १८०७ में लार्डमिन्टो गवर्नर जेनरल १८०७ ई० मुक़र्रर होकर आया। और सर जार्जबार्लो लार्डबेंटिंक के उहदे पर मंदराज चला गया॥ लार्डमिन्टो को पांच बरस तक कुछ फ़ौज बुंदेलखंड में रखनी पड़ी सन् १८१२ में कालिंजर का क़िला हाथ लगा। और वहां का बखेड़ा तै हुआ॥

सर्कार को फ़रासीस के मशहूर शाहनशाह नेपोलियन बोनापार्ट की तरफ़ से हिन्दुस्तान पर हमला होने का खटका था। और इन दिनों में उस का एक वकील भी बड़ी धूमधाम से ईरान के बादशाह के पास आया था॥ इस लिये लार्डमिन्टो ने बीच के मुल्कवाले यानी पंजाब और अफ़ग़ानिस्तान और ईरान के मालिकों से क़ौल क़रार कर लेना मुनासिब समझा॥

पंजाब में रंजीतसिंह सिक्खों का राजा बन बैठा था। और हर तरफ़ से मुल्क दबाता चला जाता था॥ यहां तक कि सतलज इस पार अपनी फ़ौजें उतार लाया। और जमना को अपने राज की सर्हद्द बनाना चाहा॥ जब लार्ड मिन्टो की तरफ़ से १८०८ ई० चार्लसमिट्काफ़ उसके पास पहुंचा। वह इसके समझाने को पहले

* विलायत से इस किताब में सब जगह इंगलिस्तान की विलायत समझना चाहिये॥

तो कुछ ख़याल में नहीं लाया। लेकिन अकूरलोनी का फ़ौज समेत लुधियाने में पहुंचना सुनकर इस तरफ़ से बिलकुल निराम हो गया। और सतलज को सरहद मानकर पच्चीसवीं
१८०६ ई० अप्रेल सन् १८०६ में दोस्ती के अहदनामे पर दस्तख़त कर दिया।

अफ़ग़ानिस्तान के तख़्त पर अहमदशाह दुर्रानी का पोता शुजाउल्मुल्क था। उस के पास लार्डमिन्टो की तरफ़ से मोंटस्टुअर्ट एल्फ़िन्स्टन पहुंचा। शुजाउल्मुल्क ने बड़ी ख़ातिदारी की लेकिन दोस्ती के लिये सर्कार से मदद के तौर पर कुछ रुपया मांगा वह लार्ड मिन्टो ने मंज़ूर नहीं किया। ईरान में इंगलिस्तान के ख़ुद बादशाह की तरफ़ से वकील आया और यहां से भी सरजान मालकम भेजा गया।

मंदराज की फ़ौज में सिपाहियों के देरों के ख़र्च का अफ़सरों को ठीके के तौर पर कुछ मुक़र्रर चला आता था। सरजार्जबार्लो ने इस तरीक़े को मोक़ूफ़ करना चाहा। इस में और कई और भी बातों में फ़ौजी और मुल्की साहिबों के दिलों के दर्मियान फ़र्क़ आ गया। गवर्नर को बादशाही फ़ौज और हिन्दुस्तानी सिपाहियों पर भरोसा था। हुक्म दिया कि कम्पनी की पल्टनों में जिन की तरफ़ से खटका पैदा हुआ था गोरे और सिपाही अपने अफ़सरों से जुदा कर दिये जायें इस पर श्रीरंगपट्टन में अफ़सरों ने बलवा किया बादशाही फ़ौज को क़िले से बाहर निकाल दिया। और बाहर छावनी पर गोला चलाना शुरू किया। चितलदुर्ग की सर्कारी फ़ौज भी इनके शामिल होने को आती थी। लेकिन बादशाही ड्रागून के रिसाले ने रास्ते ही में छितर बितर कर दी। हैदराबाद में भी सर्कारी फ़ौज सर्कशी पर मुस्तइद हुई थी और जलना और मोसलीपट्टन की फ़ौज को शामिल होने के लिये चिट्ठी भेजी थी। लेकिन फिर कुछ समझ गयी। क़ुसूर मुआफ़ चाहा। लार्डमिन्टो उस वक़्त मंदराज में था। बीस अफ़सरों को मोक़ूफ़ किया। बाक़ी का क़ुसूर मुआफ़ कर दिया।

१८१३ ई० सन् १८१३ में सर्कार कम्पनी को पार्लामिंट से इस मुल्क की नयी सनद मिली। और उसकी शर्तों के बमूजिब इंगलिस्तान

के तमाम सौदागरों को इस मुल्क में तिजारत करने की इजाज़त हासिल हो गयी। उसी साल के आख़िर में लार्डमिन्टो अपने काम से मुस्ताफ़ी हुआ। और अर्ल आफ़ माइरा गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर आया।

अर्ल आफ़ माइरा

नयपालवाले बहुत दिनों से अपना राज बढ़ाते चले आते थे। यहां तक कि अंगरेज़ी अमलदारी पर हाथ फैलाने लगे। जब समझाने बुझाने से कुछ काम नहीं निकला सर्कार ने लड़ाई १८१४ ई० की तयारी की राजा बालक था काम राज का काजी भीमसेन करता था। फ़ौज जंगी बारह ही हज़ार थी पर उसकी मज़बूती और बहादुरी पर पूरा एतिबार था। ३५०० आदमी जेनरल जिलस्पी के साथ सहारनपुर से देहरादून गये और वहां से अढ़ाई कोस के तफ़ावत पर नयपालियों के कलंगा नाम क़िले पर हमला किया क़िले में कुल छ सौ नयपाली थे लेकिन जेनरल जिलस्पी मारा गया। और सर्कारी फ़ौज को पीछे हटना पड़ा। बीस पच्चीस दिन में जब दिल्ली से भारी तोपें आन पहुंचीं तीन दिन के गोले बरसने में क़िले के अंदर कुल सत्तर आदमी जीते बाक़ी रह गये। पर सर्कारी फ़ौज के हाथ वे भी नहीं लगे क़िलेदार के साथ किसी तरफ़ को निकल गये। इन की इस जवांमर्दी से नयपालियों का दिल बहुत बढ़ा और सर्कारी फ़ौज को नुक़सान उठाना पड़ा। कलंगा से सर्कारी फ़ौज पच्छम सिरमोर की राजधानी नाहन के पास जैतक का क़िला लेने को गयी। लेकिन वहां इसकी कोशिश बेफ़ाइदा हुई। क़िले पर झंडा नयपालियों का फहराता रहा ४५०० आदमी जेनरल ऊड के साथ गोरखपुर की सर्हद्द से पालपा का क़िला लेने को रवाना हुए। लेकिन रास्ता जंगल झाड़ी और तराई में ऐसा ख़राब पाया कि जब बीमार पड़ने लगे बुटवल से लौटकर गोरखपुर की छावनी में चले आये। आठ हज़ार आदमी जेनरल मार्ला के साथ दानापुर से बेतिया होकर नयपाल की राजधानी काठमांडू लेने को चले लेकिन सर्हद्द पर पहुंचते

ही कुछ सिपाही कट जाने के सबब जेनरल मार्ली ऐसा बे दिल हो गया। कि सर्हद्द की हिफ़ाज़त के लिये कुछ थोड़ी सी फ़ौज छोड़कर बेतिया हट आया॥ और जब इतनी मदद पहुंची कि १३००० आदमी इसके तहत में हो गये तब भी क्या जाने इसके मन में क्या समाई बे कहे सुने अचानक एक दिन सूरज निकलने से पहले फ़ौज से निकल कर किसी तरफ़ को चल दिया। इस अर्से में कर्नल गार्डनर ने रुहेलखण्ड से कमाऊं में घुस कर अलमोरे का क़िला नयपालियों से ख़ाली करवा लिया॥ लेकिन कप्तान हियर्सी जो उस से शामिल होने को आता था। शिकस्त खाकर नयपालियों की क़ैद में पड़ गया॥ निदान यह तो जिलस्पी और मार्ली सरीखों की उतावली और बेदिली थी। अब जेनरल अक्टरलोनी की बहादुरी सुनो इसने छ हज़ार आदमी लेकर हंडुर की राजधानी नालागढ़* नयपालियों से ख़ाली करा ली॥ नयपालियों का राज इस वक़्त कोटकांगड़े तक पहुंच गया था बिल्कुल पहाड़ी राजाओं को उनके राज से बेदख़ल कर दिया था। या उन से भारी कर यानी ख़राज ठहराकर उन्हें अपना ज़ेलदार बना लिया था॥ बहुतेरे राजा इन नयपालियों के निकाले सर्कारी फ़ौज के साथ ख़िदमत के लिये हाज़िर थे हमने इस लड़ाई का हाल ख़ुद राजारामसिंह नालागढ़वाले की ज़ुबान से सुना है वह उस वक़्त जेनरल अक्टरलोनी के साथ था। नालागढ़ से सर्कारी फ़ौज रामगढ़ की तरफ़ गयी नयपालियों का नामी जेनरल अमरसिंह थापा तीन हज़ार सिपाही लेकर उसके बचाने को आया॥ जेनरल अक्टरलोनी ने भी अपनी मदद के लिये कुछ और सर्कारी फ़ौज के आ जाने का इन्तिज़ार करना मुनासिब जाना। और फिर बड़ी अक़्लमन्दी के साथ मलौन के मज़बूत क़िले की तरफ़ कूच किया जब नयपाली रामगढ़ से
१८१५ ई० मलौन के बचाने को चले रामगढ़ सहज में सर्कार के क़ब्ज़े में आगया॥ निदान सर्कारी फ़ौज तो उस पहाड़ के नीचे जिस पर मलौन का क़िला है एक नदी के कनारे पड़ी थी और नयपालियों

---

* शिमला की एजंटी के ताबे है॥

मलौन से सूरजगढ़ तक पहाड़ पर मोरचे जमाये थे। रैला और देवथल इसके बीच में थे दोनों कमज़ोर थे। अक्टरलोनी ने मेजर इनिस के तहत में तो कुछ फ़ौज रैला पर भेजी और कर्नल्टाम्सन को देवथल पर हमला करने का हुक्म दिया। इसी तरह कप्तान शावर्स को क़िले के नीचे नयपालियों की छावनी लेने को रवाना किया। कप्तान शावर्स मारा गया। लेकिन रैला और देवथल सर्कारी फ़ौज के क़ब्ज़े में आया। दूसरे दिन अमरसिंह ने भक्तिसिंह को इन्हें वहां से निकालने के लिये बढ़ाया। और आप निशान के साथ बची हुई फ़ौज लेकर मदद को मुस्तइद रहा। नयपाली कमान की शकल भक्तिसिंह के पीछे अंगरेज़ी फ़ौज का दोनों कनारा दबाय शेरों की तरह इस तरह पर सीधे बढ़े आते थे कि अगर्चे सर्कारी तोपख़ाने से ज़ंजीरी गोले झाड़ू की तरह मैदान को दुश्मनों से साफ़ कर रहे थे इन नयपालियों के निशानों से सर्कारी तमाम तोपों पर कुल तीन अफ़सर और तीन ही गोलंदाज़ बाक़ी रह गये। बाक़ी सब काम आये या घायल होकर बेकाम हो गये। दो घंटे तक कामिल लड़ाई होती रही। आख़िर अंगरेज़ी जवानों ने संगीनें चढ़ाईं और नयपालियों पर हमला कर दिया पांव न ठहर सके पीठ दिखायी। भक्तिसिंह की लाश खेत रही। अमरसिंह क़िले में घुस गया वीर और बहादुर दुश्मन भी इज़्ज़त के लायक़ है जेनरल अक्टरलोनी ने भक्तिसिंह की लाश दुशाले में लपेट कर अमरसिंह के पास भिजवा दी। उसकी दो स्त्रियां उसके साथ सती हुईं सर्कारी फ़ौज रोज़ बरोज़ क़िला लेने की तदबीरें करती जाती थी। यहां तक कि आठवीं मई को हमला कर देने की तयारी हुई। अमरसिंह ने अब अपनी ताक़त मुक़ाबले की न देखकर इस क़रार पर कि सर्कार उसके आदमियों को और जैतक के क़िले वालों को भी अपने हथियार और माल असबाब समेत नयपाल चला जाने दे क़िलों को ख़ाली करके जमना के पच्छम बिल्कुल इलाक़े छोड़ दिये। अमरसिंह के शिकस्त खाने से नयपाली सुस्त पड़ गये। पयाम

सुलह का भेजा। लेकिन जब सर्कार ने देखा कि वह ख़ाली दिन बिताना चाहते हैं और दूसरे साल फिर लड़ने का सामान तयार करते जाते हैं सत्तरह हज़ार फ़ौज देकर जेनरल अक्रूरलोनी को कि अब ख़िताब मिलकर सर डेविड अक्रूरलोनी हो गया था नयपाल पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया॥ इसने अपना लश्कर ऐसे ऐसे घाटों से और नाले खोलों से कि जहां घने जंगलों के सबब सूरज की किरन भी नहीं पहुंचती थी निकालकर मकावनपुर से कोस भर के अंदर आ डाला। और एक अच्छी लड़ाई लड़ा॥ ५०० आदमी नयपालियों के मारे गये क़िलेदार ने कि काजी भीमसेन का भाई था कहला भेजा आप क्यों लड़ते हैं महाराज ने आप के कहने बमूजिब सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिया निदान इस सुलहनामे के बमूजिब काली नदी नयपाल की पच्छिम सरहद्द ठहरी। और सिक्कम के राजा की ज़मीन जो नयपालियों ने दबा ली थी पूरब में उसे लौटवा दी गयी॥ और काठमांडू में एक सर्कारी रज़ीडंट का रहना क़रार पाया। गवर्नर जेनरल को बादशाह के यहां से मार्क्विस आफ़ हेस्टिंग्ज़ का ख़िताब मिला और सर डेविड अक्रूरलोनी के नाम में शुकराना आया॥

इस में शक नहीं कि मरहठों का ज़ोर घटा दिया गया था। पर उन का हौसिला भूभल में दबे हुए अंगारे की तरह सुलगता रहा॥ पेशवा फिर भी इनका पेशवा बनने की आर्ज़ू रखता था। छुप छुप के नागपुर ग्वालियर और इन्दौर यानी भोंसला सेंधिया और हुल्कर के पास पयाम भेजता रहता था॥ बड़ोदेवाला गायकवाड़ सर्कार के कहने में था। इसीलिये पेशवा उस से ख़ार खाता था॥ आपस की किसी तक्रार के तसफ़िये के लिये जब सर्कार ने जान की ज़िम्मेवारी लेकर गायकवाड़ की तरफ़ से गंगाधर शास्त्री को पेशवा के पास भिजवाया। पेशवा पंडरपुर में था उसके मंत्री यानी दीवान् त्रिम्बकजी ने उसे पंडरनाथ के दर्शन को बुलाया॥ जब यह दर्शन

करके मंदिर से डेरे की तरफ़ लौटा । पांच आदमियों ने पीछे
से झपटकर उसका काम तमाम कर डाला ॥ सर्कार जान गयी
कि यह पेशवा के इशारे से हुआ। लेकिन उस से कुछ न कहकर
त्रिम्बक को बम्बई के पास ठाणा के क़िले में क़ैद कर दिया ॥
पेशवा को यह बहुत बुरा लगा। पर इलाज क्या था॥ इस अर्से में
पिंडारों ने बड़ा ज़ुल्म मचा दिया था यह निरे लुटेरे थे। हिंदू
मुसल्मान सब क़ौम के आदमी उन में शामिल थे ॥ सवारी उनकी
घोड़े से टट्टू तक। और हथियार उनके बंदूक़ से निरे सोंटे तक ॥
हज़ारों ही गिनती में थे मंज़िलों का धावा मारते थे। जहां जाते
थे ठीकरे तक नहीं छोड़ते थे ॥ हुल्कर और सेंधिया ने इनको
नर्मदा कनारे इलाक़े दे रक्खे थे। और दुश्मनों का इलाक़ा तबाह
करने को इन्हें बहुत अच्छा वसीला समझते थे ॥ अब तक तो इन्हों
ने पेशवा और हैदराबाद और नागपुरवाले के इलाक़ों को लूटा
लेकिन अब सर्कारी अमल्दारी में भी धावा मारना शुरू किया।
किसी साल बिहार का सूबा लूटा किसी साल सूरत जा घेरा
किसी साल गंतूर और कड़प में सिर जा निकाला ॥ गवर्नर जेन-
रल को मालूम हो गया कि जब तक यह पिंडारे नेस्तनाबूद
न किये जायंगे इस मुल्क में अमन चैन की सूरत पैदा न
होगी निदान गवर्नर जेनरल ने हर तरफ़ से फ़ौजों की रवा- १८१७ ई०
नगी का हुक्म जारी किया। और इस हुक्म से यहां और दखन
दोनों जगह मिलाकर एक लाख तेरह हज़ार आदमी का लश्कर
३०० तोपों के साथ रवाना हुआ ॥ बंगाले की इकसठ हज़ार
सिपाह में से बड़ा हिस्सा गवर्नर जेनरल के साथ कानपुर में
था। दहना बाज़ू आगरे में रहा ॥ बायां बुंदेलखंड में उसके
बायें ओर भी दो टुकड़े मिर्ज़ापुर के पास और बिहार की
सर्हद्द पर थे बची हुई फ़ौज सर डेविड अक्टरलोनी के तहत
में दिल्ली की हिफ़ाज़त को रही। दखन की बावन हज़ार
सिपाह मंदराज के कमांडरइन्चीफ़ सर टी० हिस्लप ने पांच हिस्सों
में बांटी ॥ लेकिन मसल मशहूर है खेल न कूदा कूदो गोन
पिंडारों से तो अभी लड़ाई शुरू भी नहीं हुई थी। पेशवा

ने मुक़ाबले पर कमर बांधी ॥ चिम्बक ठाखा के क़िले से भाग आया था । पेशवा सर्कार के दिखलाने को तो उसकी गिरफ़्तारी की कोशिश करता था और छुप छुप कर उसे हर तरह की मदद पहुंचाता था ॥ जब नयी सिपाह भरती करने लगा और सर्कारी सिपाह को इधर से फोड़कर अपनी तरफ़ मिलाने की उसकी पेरवी ज़ाहिर हो गयी रज़ीडंट एल्फ़िंस्टन साहिब ने अपनी फ़ौज को पूना के पुरब की छावनी छोड़कर उत्तर किरकी में रज़ीडंटी के पास आ जाने का हुक्म दिया । पेशवा को यह बुरा लगा रज़ीडंट से कहला भेजा कि आप इस हर्कत से बाज़ रहिये रज़ीडंट ने साफ़ जवाब दिया और जब देखा कि पेशवा के सिपाही रज़ीडंटी और छावनी के बीच में जमा होने लगे रज़ीडंटी छोड़कर किरकी की छावनी में चला आया ॥ पेशवा के सिपाहियों ने रज़ीडंटी लूटकर जला दी । पेशवा की फ़ौज में तख़मीनन् दस हज़ार सवार और दस ही हज़ार पैदल होंगे और सर्कारी सिर्फ़ पैदल सिपाही सो भी तीन हज़ार से कम लेकिन सर्कारी सिपाहियों ने हमला किया और पेशवा की सारी फ़ौज को भगा दिया पेशवा ने पुरंदर की राह ली ॥ वहां भी पैर न जमे सितारे गया । जब वहां भी न ठहर सका शेवाजी के जानशीन यानी सितारे के राजा को उस के कुनबे समेत साथ लेकर पहले दखन की तरफ़ बढ़ा ॥ फिर मालवे को फिरा । फिर पूना की जानिब मुड़ आया ॥ निदान आगे आगे तो पेशवा * अपने नाम के अर्थ बमूजिब भागा चला जाता था और पीछे पीछे सर्कारी फ़ौज उसके रगेदने को परछाईं की तरह पीछा किये हुए थी । पूना के पास भीमा किनारे कोरा गांव में एक छोटी सी लड़ाई भी हो गयी ॥ खेत सर्कारी फ़ौज के हाथ रहा सितारे के क़िले पर सर्कार ने राजा का निशान चढ़ा दिया । और पेशवा की माज़ूली का उसके उहदे से इश्तिहार जारी किया ॥ अष्टी की लड़ाई में पेशवा का

* फ़ारसी में पेश आगे को कहते हैं पेशवा का अर्थ जो आगे रहे इस का नाम बाजीराव था ॥

वफ़ादार जेनरल गोकला मारा गया । और सितारे का राजा अपने कुनबे समेत सर्कार की हिमायत में चला आया । निदान पेशवा इस क़दर हेरान और परेशान हुआ कि आख़िर थक कर और हार मानकर सन् १८१८ में आठ लाख साल का पिंशन १८१८ ई० क़बूल कर लिया । और मुल्क से दस्तबर्दार होकर गंगा सेवन के लिये बिठूर में आ रहा चिम्बक को सर्कार ने गिरफ़्तार करके जनम भर के लिये चनार के क़िले में क़ैद कर दिया ।

इस पेशवा की उखाड़ पछाड़ में नागपुर के राजा आपा साहिब की नटखटी सर्कार को बख़ूबी साबित हो गयी वह पेशवा और पिंडारों से साज़िश रखता था । और पूना की रज़ीडंटी फूंकने के बाद उसने पेशवा का दिया हुआ ख़िताब सेनापति का इख़्तियार किया था और अपने झंडे पर पेशवा का निशान यानी ज़रीपटका चढ़ा दिया था । जेन्किंस साहिब रज़ीडंट अपनी रज़ीडंटी की हिफ़ाज़त का उपाय करने लगे रज़ीडंट के पास उस वक़्त कुल तेरह सौ सिपाही थे और राजा के पास बीस हज़ार सवार पैदल रज़ीडंटी और शहर के बीच में एक पहाड़ी सी है नाम उसका सीताबलदी उसी पर सर्कारी सिपाहियों ने मोरचा जमाया । सत्ताईसवीं नवम्बर सन् १८१७ को राजा की फ़ौज ने इन पर हमला किया इस लड़ाई में सर्कारी सिपाहियों ने निहायत बहादुरी दिखलायी यहां तक कि चौथाई कट गये पर खेत न छोड़ा । राजा की सारी फ़ौज को जो दलबादल की तरह उमड़ आयी थी तीन तेरह करके भगा दिया जब राजा ने यह हाल देखा । कहला भेजा कि फ़ौज बे परवानगी लड़ी मुझे बड़ा अफ़सोस है मैं सर्कार का ताबे हूं रज़ीडंट ने जवाब दिया कि अगर तू सच्चा है फ़ौज छोड़कर हमारे पास चला आ । राजा रज़ीडंटी में चला आया । रज़ीडंट ने उसे फिर नये सिर से नागपुर की गद्दी पर बिठाया । लेकिन यह नादान इस पर भी अपनी हर्कत से बाज़ न आया । सर्कार को दुश्मन और पेशवा को दोस्त समझता रहा । तब नाचार सर्कार ने उसे नज़रबंद कर के इलाहाबाद को रवाना किया । और उसकी जगह नागपुर की

गद्दी पर रघुजी भोंसला के पोते को बिठाया। लेकिन आपा रास्ते से भागकर नागपुर से ८० कोस पर नर्मदा के दखन एक पहाड़ी गोंड सर्दार की पनाह में चला गया। और वहां फ़ौज जमा करके
१८१६ ई० बखेड़ा उठाने लगा। निदान सन् १८१६ में जब सर्कार ने उसके इलाज की तदबीर की वह उन जंगल पहाड़ों को छोड़कर सेंधिया के क़िले असीरगढ़ में जा घुसा और फिर फ़क़ीरी भेस में पंजाब की तरफ़ चला गया। सर्कार ने जोधपुर के राजा की फ़ेलज़ामिनी पर उसे वहां रहने की इजाज़त दी और एक मुद्दत बाद उसी जगह उसका मरना हुआ। सर्कार ने इस क़ुसूर पर कि असीरगढ़ के क़िलेदार ने आपा साहिब को पनाह दी थी और क़िलेदार को सेंधिया की पोशीदा पर्वानगी थी सेंधिया को सज़ा देने के लिये उस मशहूर मज़बूत क़िले को घेरकर अपने दख़ल में कर लिया। अब रह गया हुल्कर सो जस्वन्तराव का तो परलोक होगया था उस की रानी तुलसीबाई ने एक लड़का गोद लेकर गद्दी पर बिठाया। तुलसीबाई ने अपनी फ़ौज के डर से अपने यार गनपतराव समेत सर्कारी पनाह में चला आना चाहा। लेकिन फ़ौज ने इस में अपनी तबाही समझकर तुर्त उस का सिर काट डाला और लड़के राजा के नाम से सर्कार के साथ लड़ने का सामान किया। मंदराज का कमांडरइनचीफ़ जो पास ही मौजूद था बिजली की तरह फ़ौज लेकर इनके सिर पर पहुंचा। और सिप्रा पार महीदपुर में इन्हें ऐसा काटा मारा और भगाया कि तब से वह राज बिल्कुल सुस्त पड़ गया। सन् १८१८ में सुलहनामा लिखा गया। क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि सर्कार ने तो ख़ाली लुटेरों और डाकू यानी पिंडारों का इस फ़ौज से नाश करना चाहा था लेकिन वहां उनके हिमायती बल्कि बानी मबानी यानी मुल्कगीर मरहठों ही का नाश होगया। गोया बिल्कुल हिन्दुस्तान बेख़लिश हुआ। और आप से आप सर्कार के साये में चला आया। सिवाय सितारे के तमाम इलाक़े पेशवा के और अक्सर इलाक़े नागपुर के

दखन में आ जाने से सर्कारी अमल्दारी बहुत बढ़ गयी अज-
मेर भी इनके क़बज़े में आया। और कच्छ गुजरात और रज-
पुताने के सब राजाओं ने बल्कि उदयपुर के रानाओं ने भी
जिन्हों ने न मुसल्मानों के साम्हने और न मरहठों के आगे
कभी सिर झुकाया था बड़ी ख़ुशी से सर्कार का हिफ़ाज़त का
हाथ अपने ऊपर क़बूल किया॥ जब पेशवा ऐसे सर्दार की
जो नव लाख घोड़ों का धनी कहलाता था आई पच गयी तो
अब पिंडारों का हम क्या हाल लिखें इतना ही लिखना काफ़ी
है कि दखन की सर्कारी फ़ौज ने नर्मदा पार होते ही पिंडारों
के बिल्कुल इलाक़ों में क़बज़ा करके उन्हें तीन तेरह कर दिया।
और बंगाले की सर्कारी फ़ौज ने भी ख़ूब उनका शिकार किया॥
अमीरख़ां ने जिसके जानशीन अब टोंक के नव्वाब कहलाते
हैं अपनी लुटेरी फ़ौज दूर करके सर्कार को अहदनामा लिख
दिया। करीमख़ां और वासिलमुहम्मद पिंडारों के सर्दारों ने
जो महीदपुर में हुल्कर की फ़ौज के साथ सर्कार से लड़े थे अपने
तईं सर्कार के हवाले कर दिया॥ सर्कार ने उन्हें खाने को
गोरखपुर में जागीरें दीं वासिलमुहम्मद ने भागना चाहा था
और जब भाग न सका ज़हर खाकर मर गया। इन पिंडारों
का नामी सर्दार चीतू जो आपा साहिब के साथ असीरगढ़
तक गया था जंगल में शेर का लुक़मा हुआ॥

लखनऊ का नव्वाब वज़ीर सआदतअलीख़ां सन् १८१४ में
मर गया था। उसके बेटे और जानशीन ग़ाज़ियुद्दीनहैदर ने
अब सर्कार की इजाज़त से लक़ब बादशाह का इख़्तियार किया॥

मार्क्विस आफ़ हेस्टिंग्ज़ सन् १८२३ में गवर्नर जेनरल के उहदे १८२३ ई०
से मुस्ताफ़ी होकर विलायत गया। और वहां उसे इन ख़िदमतों
के इनाम में छ लाख रुपये की क़ीमत का सर्कार से इलाक़ा
मिला॥ इस के उहदे पर जार्ज केनिंग * मुक़र्रर हुआ था।
लेकिन पीछे से जब उस ने उस से इन्कार किया लार्ड अम्हर्स्ट

---

* इसी के बेटे लार्ड केनिंग ने सन् १८५८ का बलवा
दबाया और इस मुल्क को तबाह होने से बचाया॥

गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर पहली अगस्त को कलकत्ते में दाख़िल हुआ॥

लार्ड अम्हर्स्ट

नयपालियों की तरह बर्म्हावालों का भी सिर खुजलाया। मुल्क बढ़ाने का शौक़ पैदा हुआ॥ अराकान मनीपुर और आसाम फ़तह करके कचार पर चढ़ाई की। कचार के राजा ने सर्कार की पनाह ली सर्कार ने उसकी मदद को फ़ौज भेजी॥ लेकिन बर्म्हावालों का तो सिर आसमान पर चढ़ा हुआ था गवर्नर जेनरल से कहला भेजा कि चटगांव ढाका और मुर्शिदाबाद भी किसी ज़माने में हमारे मुल्क का हिस्सा था भला चाहते हो तो अब भी छोड़ दो गवर्नर जेनरल तो हंसकर चुप रहे लेकिन इन पागलों ने सर्कारी इलाक़ों को अपनी नानी जी की मीरास समझकर चटगांव के कनारे पर जो शाहपुरिया के टापु में सर्कारी चौकी के तेरह जवान थे तीन उन में से काट डाले। बाक़ी बेचारे जान लेकर भागे॥

१८२४ ई० निदान पांचवीं मार्च सन् १८२४ को सर्कार ने लड़ाई का इश्तिहार दिया। कुछ थोड़ी सी फ़ौज ने तो ब्रम्हपुत्र के कनारे कनारे जाकर बिल्कुल आसाम में दख़ल किया॥ और दूसरी ने अराकान जा लिया। और बाक़ी ११००० फ़ौज ने जहाज़ों * में सवार होकर रंगून पर निशान चढ़ाया॥ अब सर्कारी फ़ौज बर्म्हा की राजधानी आवा लेने के इरादे वहां से आगे बढ़ी। हर लड़ाई में बर्म्हावालों पर फ़तह पाती गयी॥ लेकिन आबहवा की ख़राबी और बेगाना मुल्क होने के सबब आदमी और रुपया दोनों का बड़ा नुक़सान हुआ। बड़े बड़े विकट जंगल और दलदलों में लड़ना पड़ा॥ अंधे के हाथ जैसे बटेर लगे मेंगीमहाबंदुला के आदमियों ने कहीं चटगांव के ज़िले में रामु के दर्मियान ३५० सर्कारी सिपाही काट डाले थे राजा ने इसे दूसरा रुस्तुम समझा। सेनापति मुक़र्रर

---

* इन में डायना नाम पहला ही धुएं का जहाज़ था जो लड़ाई के लिये भेजा गया॥

करके सर्कारी फ़ौज के मुक़ाबले को भेजा। इसने भी बीड़ा उठाया कि मैं फ़रंगियों को निकाले दर्बार में मुंह नहीं दिखलाऊंगा लेकिन सच उसने मुंह नहीं दिखलाया। कई लड़ाइयों के बाद कुनाब्यू के क़िले में बान लगकर मर गया। निदान जब सर्कारी फ़ौज इन्हें शिकस्त देती इनके क़िले और तोपख़ाने लेती फ़तह के निशान उड़ाती आवा से कुल चार मंज़िल इधर यंडाबू में आ पहुंची। राजा ने घबराकर सुलह कर ली। चार क़िस्तों में एक करोड़ रुपया लड़ाई के ख़र्च बाबत दिया *। और आसाम अराकान और मर्तबान के दखन का बिल्कुल मुल्क छोड़ दिया। १८२६ ई०

इसी लड़ाई के शुरू में सैंतालीसवीं पल्टन को और दो पल्टनों के साथ जो बारकपुर की छावनी में थीं रंगून जाने का हुक्म हुआ था। सिपाही समुद्र का नाम और बर्म्हा की आबहवा और रामू की क़तल का हाल सुनकर हिचकिचा गये जाने से इन्कार किया। परेड पर दो गोरों की पल्टनें कलकत्ते से बुलायी गयीं सैंतालीसवीं के बहुतेरे सिपाही तोप से उड़ा दिये गये। बहुतेरे फांसी पड़े बहुतेरों ने क़ैद में मिट्टी काटी बाक़ी के नाम कट गये।

भरतपुर में (सन् १८२३) राजा रंजीतसिंह के बेटे रणधीरसिंह के लावल्द मरने पर रणधीरसिंह का भाई बलदेवसिंह गद्दी पर बैठा। उसके भतीजे दुर्जनसाल ने इस झूठी बात पर कि मुझे रणधीरसिंह ने गोद लिया था गद्दी का दावा किया। बलदेवसिंह ने अपने लड़के बलवन्तसिंह को रजपूताने के रज़ीडंट सर डेविड आक्टरलोनी की गोद में रख दिया। और कहा कि दुर्जनसाल ज़रूर मेरे बाद बखेड़ा करेगा मैं चाहता हूं कि आप मेरे रहते मेरे लड़के को सर्कार की तरफ़ से गद्दी पर

---

* लेकिन अपनी तवारीख़ों में यही लिखा कि किसी टापू के जंगली आदमी सुनकर इस मुल्क पर चढ़ आये थे जब भूखों मरने लगे दयावान महाराज ने करोड़ रुपया राहख़र्च देकर अपने वतन को लौट जाने की इजाज़त मरहमत फ़र्माई यह हाल है एशिया की तवारीख़ों का!

बैठा दें रज़ीडंट ने ख़ुशी से यह बात क़बूल की और बलवन्तसिंह को गद्दी पर बैठा दिया ॥ सन् १८२५ में बलदेवसिंह का परलोक हुआ। दुर्जनसाल ने बलवन्तसिंह के मामू को मार डाला और बलवन्तसिंह को क़ैद करके राजगद्दी पर आप बैठा ॥ सर डेविड अक्टरलोनी ने लड़ाई की तयारी की। लेकिन सर्कार ने उसकी यह तजवीज़ पसंद और मंज़ूर न की ॥ सर डेविड अक्टरलोनी ने उसी दम इस्तीफ़ा भेजा। और मेरट के मुक़ाम में मरगया ॥ भरतपुरवालों का गुमान है कि उसने ज़हर खाया। उसके उहदे पर सर चार्लस् मेटकाफ़ मुक़र्रर हुआ ॥ इस अर्से में दुर्जनसाल का भाई माधोसिंह उस से बिगड़ गया। और डीग में जाकर सिपाह भरती करने लगा ॥ सर्कार ने देखा कि पिंडारों की तरह यह लोग फिर लूट मार का बाज़ार गर्म करेंगे और होते होते सर्कारी अमल्दारी में फ़साद उठावेंगे दुर्जनसाल को बहुत समझाया। जब उसने कुछ न माना लार्ड कम्बर्मिअर कमांडरइन्चीफ़ को बीस हज़ार फ़ौज देकर दुर्जनसाल के निकालने के लिये भेजा ॥ दसवीं दिसम्बर को सर्कारी लश्कर भरतपुर के साम्हने पहुंचा। और अठारहवीं जनवरी को सुरंगें उड़ा कर क़िला तोड़ा ॥ दुर्जनसाल * पकड़ा गया। बलवन्तसिंह को सर्कार ने नये सिर से गद्दी पर बिठाया ॥

इन्हीं दिनों में यानी सन् १८२४ में सर्कार ने उन लोगों को सुमित्रा के टापू में बन्कुलन देकर उनसे मलाका और सिंहपुर का टापू ले लिया। और यही स्ट्रेट सेट्लमेन्ट कहलाया ॥

लार्ड बेंटिंक

१८२८ ई० लार्ड अम्हर्स्ट के जाने पर वही लार्ड बेंटिंक जो साबिक़ में मंदराज का गवर्नर था। वसीले के ज़ोर से गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हो आया ॥ इसके वक़्त में लड़ाई भिड़ाई कोई नहीं हुई। बड़ी भारी बात यह हुई कि सती होने की बड़ी बुरी रसम एक क़लम् मौक़ूफ़ की गयी ॥

* बनारस भेजा गया और उसी जगह मरा ॥

कुड़ग का राजा * अपने ज़ुल्म के बाइस दब्सन से बनारस क़ैद हो आया। और उस का इलाक़ा उस की रअय्यत की ख़ाहिश मुताबिक़ सर्कारी अमल्दारी में शामिल हो गया॥

लार्ड बेंटिंक ने सर्कारी ख़र्च की बहुत तख़्फ़ीफ़ की। और हिन्दुस्तानियों को सर्कारी बड़े ओहदों के मिलने की नेव डाली॥

सन् १८३३ में कम्पनी को २० बरस के लिये फिर सनद मिली। १८३३ ई०
हिन्दुस्तान की तिजारत तो पहले ही इस के हाथ से निकल गयी थी अब इस सनद की रू से चीन की भी बाक़ी न रही॥

लार्ड अकलैंड

अगस्त सन् १८३५ में लार्ड बेंटिंक ने काम छोड़ा। मार्च सन् १८३५ ई०
१८३६ तक यानी लार्ड अकलैंड के पहुंचने तक सर चार्लस-मेटकाफ़ ने गवर्नर जेनरल का काम किया॥

लखनऊ का बादशाह नसीरुद्दीनहैदर † मर गया। पहले तो १८३७ ई०
इस ने दो लड़कों को अपना माना था लेकिन फिर इन्कार किया इसी सबब कर्नल लो रज़ीडंट ने उस के मरने पर उस के चचा नसीरुद्दौला को जो सआदतअलीख़ां का तीसरा बेटा था और मुसल्मानों की शरा मुताबिक़ वारिस हो सकता था मस्नद पर बिठाना चाहा॥ बिल्कुल तय्यारी हो चुकी थी। सिर्फ़ मस्नद पर बैठने की देर थी॥ कि यकायक बादशाहबेगम यानी ग़ाज़ियुद्दीनहैदर की बेगम ने कुछ सिपाही महल में घुसाकर नसीरुद्दौला और रज़ीडंट दोनों को घेर लिया। और आप आकर उन दोनों लड़कों में से एक को जिस का नाम मुंनाजान था मस्नद पर बिठा दिया॥ रज़ीडंट ने बेगम को बहुतेरा समझाया कि यह क्या पागलपना है लेकिन जब देखा कि उस की अक़्ल बिल्कुल जाती रही है किसी ढब महल से बाहर निकल आया। और कुछ सर्कारी फ़ौज ले आकर बेगम और उसके पोते को तो पकड़कर क़ैद रहने को चनार के क़िले में भेज दिया

---

* इसने पीछे विलायत जाकर अपनी लड़की को अंगरेज़ी पढ़ाया और उस लड़की ने वहां एक अंगरेज़ से शादी की॥

† ग़ाज़ियुद्दीनहैदर का बेटा था॥

और नसीरुद्दौला को मुहम्मदअली शाह के नाम से मसनद पर बिठाया॥ इस में बेगम के तीस चालीस आदमी मारे गये। और घायल हुए॥ इक़बालुद्दौला नसीरुद्दौला के बड़े भाई का बेटा था। लेकिन उस ने बेगम की तरह बेवक़ूफ़ी न करके दूसरी तरह की बेवक़ूफ़ी की कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स के साम्हने अपना दावा पेश करने को ख़ुद विलायत गया॥ और जब वहां से साफ़ जवाब पाया। बग़दाद में रहना इख़्तियार कर लिया उस का बड़ा भाई यमीनुद्दौला बनारस में रह गया॥

इसी के थोड़े दिन बाद सितारे के राजा की भी कुछ अक़्ल मारी गयी। यह न समझा कि उस ने वह अपने पुरखाओं की गद्दी सिर्फ़ सर्कार की मिहर्बानी से पायी॥ आख़िर मरहठा या गोवे में पुर्टगीज़ों से जोड़ तोड़ लगाने लगा कि उन की फ़ौज अंगरेज़ों को निकालकर इसे मुल्क का मालिक करे। और यह उन्हें धन और धरती दे॥ नागपुरवाले आपासाहिब से भी चिट्ठी पत्री जारी की। सर्कारी फ़ौज के सिपाहियों के बहकाने की कोशिश होने लगी॥ सर्कार ने बहुत समझाया। आख़िर जब किसी तरह अपनी हर्कतों से बाज़ न आया क़ैद करके बनारस भेज दिया और उस के भाई को (सन् १८३९ ई०) गद्दी पर बिठाया॥

इस अर्से में अहमदशाह दुर्रानी के पोते शाहशुजाउल्मुल्क को जो अफ़ग़ानिस्तान का बादशाह था। उस के भाई महमूद ने वहां से निकाल दिया था॥ शाहशुजा तो कुछ दिन रंजीतसिंह की क़ैद में रहकर और कोहनूर हीरा* खोकर पनाह के लिये

---

* कोहनूर हीरा शाहजहां ने अपने तख़्त ताऊस में लगाया तख़्त ताऊस दिल्ली से नादिरशाह लेगया नादिरशाह से यह हीरा अहमदशाह के हाथ लगा उस के पोते शाहशुजा से रंजीतसिंह ने बहुत बुरी तरह से लिया वह बेचारा इस के पास मदद और पनाह मांगने आया था इस ने कोहनूर के लालच में पड़कर उस पर पहरे बैठा दिये और जब तक उसने कोहनूर न हवाले किया खाना पीना बंद कर दिया॥

चंगरेज़ी ग़मल्दारी में चला आया। और महमूद को इस लिये कि उस ने अपने वज़ीर फ़तहख़ां बारकज़ई को जिसकी मदद से तख़्त पाया अंधा करके मार डाला था फ़तहख़ां के बेटे दोस्त-मुहम्मदख़ां ने तख़्त से उतारकर काबुल पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया। क़ंदहार दोस्तमुहम्मद के भाइयों के दख़ल में रहा। महमूद हिरात को चला गया और उस के बाद उस का बेटा कामरां वहां का बादशाह हुआ। कौंट सिमोनिच् ने जो ईरान में रूस का एल्ची था। यह मौक़ा अपने मालिक का इस तरफ़ इख़्तियार बढ़ाने का बहुत ग़नीमत समझा। ईरान के बादशाह को उभारा कि अफ़ग़ानिस्तान पर दावा करे और उस का लश्कर हिरात के मुहासरे को भिजवाया। बल्कि फ़ौजख़र्च के लिये कुछ रुपया भी अपने यहां से दिलाया॥ अर्थात् ईरान का लश्कर हिरात से हारकर लौट गया और जब इंगलिस्तान ने रूस से जवाब तलब किया। रूस के शाहंशाह ने असली बात छुपाकर कौंट सिमोनिच के बिल्-कुल कामों से इन्कार कर दिया। लेकिन सर्कार कम्पनी को मालूमी साबित हो गया कि रूस का हिन्दुस्तान पर दांत है जब क़ाबू पावेगा। इधर पैर फैलावेगा। और अलक्ज़ंडर बर्निस साहिब ने भी जो सन् १८३० में एल्ची होकर काबुल गये थे यही बयान किया कि दोस्तमुहम्मद बिल्कुल रूसवालों की सलाह में है और रूसवालों ने उस से पक्का वादा किया है कि हम पिशावर रंजीतसिंह से वापस ले देंगे। सर्कार ने ज़रा भी इस बात पर ग़ौर न किया कि भला रूसवाले इधर क्योंकर आसकेंगे॥ अगर कहें कि क्या वह ईरान तूरान तातार और अफ़ग़ानिस्तानवालों को बहकाकर और लालच दिखलाकर उन्हें हिन्दुस्तान पर नहीं चढ़ा सकते हैं तो टुक सोचना चाहिये कि अब वह महमूद ग़ज़-नवी और चंगेज़ख़ां का ज़माना नहीं है कि जब नंगे पांव और नंगे सिर गक्खर * लोग महमूद के रिसालों को काटते थे। और

* जनन्दपाल की लड़ाई में गक्खरों ने महमूद ग़ज़नवी का लश्कर लूटा था॥

एक हाथी के भाग जाने से अनन्दपाल सरीखे राजा लड़ाई हार जाते थे। अब जंगल से सोंटे काट काटकर बैलों पर सवार जला-लुद्दीन ख़ारज़मशाले के आदमी सिंध सागर दुआब में चंगेज़ख़ां की फ़ौज से लड़ते थे। और बड़े बड़े बादशाह बिल्कुल मदार लड़ाई का अपना तीरंदाज़ों पर रखते थे। बराबर देखते चले आते हो कि कैसी कैसी दलबादल सेना शाह सुल्तान नव्वाब मरहठे नयपाली और बर्मावालों की सर्कारी ज़रा ज़रा सी फ़ौज के साम्हने पीठ दिखा गयी। बात तो यह है कि डूप्ले और बस्सी सरीखे फ़रासीसियों की सिखलाई सिपाह भी अंगरेज़ी तोपख़ाने के साम्हने रूई के फाहों की तरह उड़ गयी। अगर कहें कि रूसवाले क्या अपनी फ़ौजें पंजाब तक नहीं ला सकते हैं तो टुक सोचना चाहिये कि रूस और पंजाब के दर्मियान कैसे कैसे जंगल उजाड़ और पहाड़ पड़े हैं पहले तो रूस में इतना रुपया नहीं कि पचास हज़ार भी अच्छी क़वाइदवाली फ़ौज ज़रूरी तोपख़ाने के साथ इस राह लाने का ख़र्च दे सके दूसरे जितने दिन उस फ़ौज को एक हिन्दूकुश पहाड़ के घाटे पार होने में लगेंगे हमारी सर्कार उस से दूनी फ़ौज धूंए के जहाज़ और रेलगाड़ियों पर इंगलिस्तान से सिंधु कनारे पहुंचा सकती है और फिर रूसवाले तो वहां रस्ते की सख़्ती से थके थकाये और अफ़ग़ानिस्तान में रसद की कमी और वहां की आबहवा नयी होने के सबब भूखे मांदे पहुंचेंगे। और अंगरेज़ सर्हद पर गोया अपने घर में होंगे पंजाब की ज़रख़ेज़ी मशहूर है कैसी कुछ रसद पहुंचेगी। इस में किसी तरह का शक नहीं कि उन पचास हज़ार रूसियों के तबाह करने को सर्कारी एक पल्टन गोरों की ख़ैबर के मुहाने पर काफ़ी होगी। निदान सर्कार ने ज़रा भी इस बात पर ग़ौर न किया और काबुल में फ़ौज लेजाकर शाहशुजा
१८३८ ई० को तख़्त पर बैठाने का मंसूबा बांधा रंजीतसिंह को भी उस में शामिल कर लिया और आपस में अहद पैमान होगया कि पिशावर वग़ैरः जो कुछ इलाक़े सिंधु उस पार ख़्वाह इस पार रंजीतसिंह ने दबा लिये थे शाहशुजा या उस का कोई जानशीन कभी उन

पर कुछ दावा न करे। सिंध के अमीरों से भी क़ौलक़रार हो गया कि उस राह सर्कारी फ़ौज के आने जाने में कुछ रोक टोक न होवे। निदान ७५०० सर्कारी फ़ौज बंगाले और बम्बई की ११० तोपों के साथ सर जान कीन साहिब बम्बई के कमांडरइनचीफ़ के तहत में सिंध और बलूचिस्तान की राह सिंधु-नदी और बोलानघाटा पार होकर क़ंदहार में पहुंची। और १८३९ ई० आठवीं मई को शाहशुजा वहां तख़्त पर बैठा बड़ी धूम धाम से उस की सलामी हुई। सर विलियम मेकनाटन साहिब सर्कार की तरफ़ से एलची के तौर पर शाह के साथ थे। अलक्ज़ंडर बर्नेस साहिब भी हमराह थे। इन को उमेद थी कि अफ़ग़ानिस्तान में दाख़िल होते ही रणजीत शाह की तरफ़ रुजू हो जायगी। लेकिन वह बात बिलकुल ज़ुहूर में नहीं आयी। यहां तक कि शाह ने जब वहां के दस्तूर बमूजिब दस हज़ार रुपया नालबन्दी को और क़ुरान क़सम खाने को ग़िलज़ई सर्दारों के पास भेजा। उन्हों ने रुपया तो ले लिया और क़ुरान वैसे का वैसा वापस किया। तेईसवीं जुलाई को बाहर से फाटक उड़ाकर सर्कारी फ़ौज ने गढ़ ग़ज़नी लिया। और सातवीं अगस्त को फ़तह का निशान उड़ाती काबुल में दाख़िल हुई दोस्तमुहम्मद तुर्किस्तान की तरफ़ भाग गया। शुजा के बेटे शाहज़ादा तैमूर के साथ जो पांच हज़ार सिपाही पिशावर से काबुल को रवाना हुए थे और जिनकी मदद के लिये रंजीतसिंह ने छ हज़ार सिख जेनरल वंतुरा के तहत में तैनात किये थे। वह भी ख़ैबर घाटे की राह फ़तीमस्जिद में लड़ते और जलालाबाद का क़िला लेते तीसरी सितम्बर को काबुल में आन पहुंचे। अब सर्कार ने देखा कि शुजा काबुल में अपने बाप दादा के तख़्त पर बैठ गया। उस तख़्त की सुस्त बुन्यादी पर मुतलक़ निगाह न करके कुछ थोड़ी सी बंगाले की फ़ौज वहां इन्तिज़ाम के लिये छोड़ दी और बाक़ी सब को हिन्दुस्तान में वापस तलब कर लिया। क़ंदहार जाते वक़्त बलूचिस्तान के हाकिम मिहराबख़ां ने कुछ छेड़छाड़ की थी इसी लिये बम्बई की फ़ौज ने लौटते वक़्त उस

का क़िला क़िलात तोड़ डाला। और वह भी उस लड़ाई में बहादुरी के साथ मारा गया॥ लार्ड अकलैंड को काबुल फ़तह होने की ख़ुशी में विलायत से अर्ल का ख़िताब आया। सर जान कीन बेरन हुआ और भी बहुतों का उन की ख़िदमत मुता-
१८४० ई० बिक़ दर्जा बढ़ा॥ चौथी नवम्बर को जब सर विलियम् मेकनाटन साहिब हवा खाकर अपनी कोठी को आते थे रास्ते में एक सवार ने ख़बर दी कि दोस्तमुहम्मद हाज़िर है और फिर दोस्तमुहम्मद ने बढ़कर और घोड़े से उतरकर तलवार नज़र दी। मेकनाटन साहिब ने उस की बड़ी ख़ातिदारी की॥ नज़रबन्द रहने के लिये हिन्दुस्तान में भेज दिया इस बरस में छोटे छोटे लड़ाई झगड़े बेशक हर तरफ़ होते रहे। लेकिन वह किसी गिनती में न थे॥ कभी कोई सर्दार मालगुज़ारी अदा करने में देर करता सर्कारी सिपाही उसका गढ़ क़िला तोड़ फोड़कर उसे होश में लादेते। कभी कोई दोस्तमुहम्मद के बेटे अकबरख़ां की मदद के लिये सिर उठाना चाहता वहां यह फ़ौरन पहुंच कर उसे उसी जगह दबा देते॥ यहां तक कि सर विलियम् मेकनाटन साहिब ने समझा कि अब मुल्क का इन्तिज़ाम बख़ूबी हो गया और क़सद किया कि अलक्ज़ंडर बर्नेस
१८४१ ई० को अपने उहदे पर मुक़र्रर करके आप गवर्नरी के उहदे पर जो सर्कार से मिला था बम्बई चले जावें। और जो कुछ सर्कारी फ़ौज काबुल में रह गयी थी उसे भी हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना कर दें॥ यह न सोचे कि अफ़ग़ानिस्तान मुसल्मानों का मुल्क है। हिन्दू और मुसल्मान में ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ है॥ वहांवाले खूब समझे हुए थे कि शाहशुजा अंगरेज़ों का कठपुतली है और तमाशा यह कि अंगरेज़ों की बदौलत उसे अपने बाप दादा का तख़्त नसीब हुआ तो भी वह इन से नाराज़ था। अपने मुल्क में इन का रहना हर्गिज़ पसंद नहीं करता था॥ उधर ईश्वर को भी मंज़ूर था कि चाहे जैसा कोई बड़ा

ताक़त वाला अक़्लमंद क्यों न हो एक दिन ठोकर खावे बल्कि यह उस की बड़ी मिहर्बानी है क्योंकि ऐसी ही ठोकरें

खाने से आदमी अपनी अक़्ल और अपनी ताक़त का भरोसा न रखकर सदा परमेश्वर का सहारा ढूंढ़ता है और उसके डर से ज़ुल्म और ग़ैरवाजिब काम न करके पूरी तरक़्क़ी को पहुंचता है। जो ठोकर न खाय घमंड में डूबकर फ़िरऔन * की तरह यकबारगी नाश हो जाता है॥ निदान अब आगे अंगरेज़ी अफ़सरों के जो जो काम काबुल में सुनोगे बस यही कहोगे "विनाशिकाले विपरीत बुद्धिः" निदान वहां बलवा होने की असल यों बयान करते हैं कि किसी अफ़ग़ान सर्दार ने किसी अंगरेज़ी उहदेदार की कुछ शिकायत † उसके अफ़सर से की। अफ़सर ने कुछ भी नहीं सुनी॥ सख़्त सुस्त कहके निकलवा दिया और यह बात कुछ उसी के वास्ते या नयी न थी। उस अफ़ग़ान ने इस बात की शिकायत शुजा से की॥ शुजा के मुंह से उस वक़्त दर्बार में बे इख़्तियार यह निकल गया कि "अज़ शुमा हेच नमेआयद" यानी तुम लोगों से कुछ भी नहीं बन पड़ता है बस इतना कहना गोया अफ़ग़ानों के बिगड़े हुए दिलों की भरी हुई तोप पर रंजक में फ़लीता पहुंचाना था सवेरे ही दूसरी नवम्बर को काबुलवालों ने बलवा किया। दुकानें सब बंद हो गयीं दो तीन सौ बदमआशों ने बर्निस साहिब की कोठी में जाकर उन्हें और तमाम साहिब लोग मेम लड़के और हिन्दुस्तानी नौकरों को जो वहां उस वक़्त मौजूद थे मार डाला और तमाम माल अस्बाब लूटकर मकानों को फूंक दिया॥ बर्निस साहिब शहर में रहते थे जब उन के मारे जाने की ख़बर छावनी में पहुंची इस बात के बदल कि तुर्त सब जवान कमर कसकर शहर में चले आते और बलवाइयों को जैसा उन्हों ने किया था उसका मज़ा चखाते। उन के अफ़सर नाहक़ सिपाहियों को इधर उधर भेजने बुलाने

* मिसर का बादशाह था मूसा के ज़माने में ख़ुदाई का दावा किया था आख़िर दर्या में डुबाया गया॥

† यह शिकायत शायद किसी लौंडी के निकाल लेजाने के बाबत की॥

और बेफ़ायदा जोड़ तोड़ जमाने में अपना क़ीमती वक़्त खोने लगे ॥ अगर बालाहिसार में भी चले जाते जहां शाहशुजा रहता था और शहर से लगा हुआ था। मक़दूर न था कि कभी कोई उन को उस क़िले से निकाल सकता ॥ लेकिन जेनरल एलफ़िंस्टन के दिमाग़ में ख़लल आगया था। और ब्रिगेडियर शिल्टन जो उस का मददगार मुक़र्रर हुआ था हिन्दुस्तान लौटने की आर्ज़ू में थी देता था ॥ दोनों ने सर विलियम मेकनाटन से यही कहा कि अब काबुल में रहना नामुमकिन जिस तरह बने जलालाबाद पहुंचने का बन्दोबस्त करो। और वहां से हिन्दुस्तान को चल दो ॥ बलवाइयों का ज़ोर इस अर्से में बहुत बढ़ा सारा काबुल पहाड़ी अफ़ग़ानों से भर गया। शहर के बाहर भी जिधर देखो यही दिखलाई देते थे गोया सारे मुल्क में बलवा हुआ बाईसवीं नवम्बर को अक्बरख़ां भी काबुल में आकर उन के शामिल हो गया ॥ निदान जब सर विलियम मेकनाटन ने देखा कि सर्कारी फ़ौज का हर तरफ़ नुक़सान होता जाता है और उस के अफ़सर सिवाय हिन्दुस्तान लौट चलने के और किसी बात पर मुस्तइद नहीं होते अक्बरख़ां से काबुल छोड़ने की बातचीत शुरू की और यह ठहरी कि दोनों की मुलाक़ात हो उस में सारी शर्तें ते पाजायें लोगों ने मेकनाटन साहिब से कहा कि अक्बरख़ां का इतबार करना अक़्लमन्दी नहीं है। उन्हों ने इतना ही जवाब दिया कि हम सब जानते हैं लेकिन ऐसी ज़िंदगी से सौ दफ़ा मरना बिहतर है ॥ निदान तेईसवीं दिसम्बर को क़रीब दोपहर के सर विलियम मेकनाटन साहिब कप्तान लारेंस * ट्रेवर और मिकेंज़ी को साथ लेकर छावनी से अकबरख़ां की मुलाक़ात को बाहर निकले अकबरख़ां इस्तिक़बाल करके उन्हें अपने डेरे पर ले गया। लेकिन वहां इन चारों से पिस्तौल और तलवारें छिनवाकर तीन को तो अपने सवारों के पीछे बिठला किसी क़िले में भिजवा दिया (कप्तान ट्रेवर घोड़े से गिर जाने

---

* यही सर हेनरी लारेंस सन् १८५७ के बलवे में अवध के चीफ़ कमिश्नर थे ॥

के बाइस रास्ते में मारा गया) और सर विलियम मेकनाटन पर जब उन्हों ने अकबरख़ां के क़ाबू से निकलना चाहा उसने तपंचा चलाया और फिर उसके साथियों ने इन्हें टुकड़े टुकड़े कर डाला॥ फ़ौजवालों की इस पर भी आंख न खुली। फिर अकबरख़ां से मुलह की बात चीत की॥ उस दग़ाबाज़ ने यह शर्त ठहरायी कि सर्कारी फ़ौज तमाम ख़ज़ाना और तोपख़ाना उसी जगह छोड़ दे। सिर्फ़ छ तोपों के साथ हिन्दुस्तान की राह ले॥ बर्फ़ पांच इंच से ज़ियादा पड़ गयी थी। सर्कारी फ़ौज साढ़े चार हज़ार सवार सिपाही और बारह हज़ार बहीर लड़के लुगायों की गिनती नहीं छठी जनवरी को पहर दिन चढ़े बृहस्पत के दिन छावनी छोड़कर जलालाबाद रवाना हुई॥ बीमारों को अकबरख़ां के सपुर्द किया। सातवीं को काबुल से पांच कोस पर बुतख़ाक में डेरा पड़ा अफ़ग़ानों ने हर तरफ़ से हमला करना शुरू करदिया॥ सर्कारी फ़ौज को अपनी तोपें आपही कीलनी पड़ीं अकबरख़ां साथ था। बेईमान हिफ़ाज़त के लिये आया था॥ जब उस से कहा कि यह क्या है। जवाब दिया कि बेक़ाबू हूं यह लोग मेरा कहना नहीं मानते फ़ारसी में सर्कारी आदमियों को सुनाकर उन्हें धमकाता था कि ख़बरदार सर्कारी फ़ौज को हर्गिज़ न छेड़ो पश्तो * में उन्हें शह देता था कि हां एक को भी इन में से जीता न छोड़ो मुआमला दीन का है॥ आठवीं को ख़ुर्दकाबुल का घाटा पार होना था यह पांच मील लम्बा है। दोनों तरफ़ अक्सर पांच पांच सौ फ़ुट तक सीधे ऊंचे पहाड़ खड़े हैं तफ़ावत दोनों किनारों में ५० गज़ से ज़ियादा नहीं है॥ नदी जो उस में ज़ोर शोर से बहती है। अट्ठारह बार उतरनी पड़ती है॥ ग़िलज़ई अफ़ग़ान उन पहाड़ों के ऊपर से गोलियों का मेह बरसाते थे। सर्कारी फ़ौज के हथियार निरे बेकाम थे॥ ये ज़मीन पर। और वे आसमान पर॥ कहते हैं कि उस रोज़ तीन हज़ार से ज़ियादा आदमी इस घाटे में मारे गये नवीं को नाहक़ ख़ुर्दकाबुल में मुक़ाम रहा अकबरख़ां ने कहला

* अफ़ग़ानों की ज़ुबान॥

मेजा कि मेम साहिब और बाबा लोगों की तक्लीफ़ मैं नहीं देख सकता हूं अगर इन को मेरे हवाले कर दो मैं बहुत आराम और हिफ़ाज़त से पहुंचवा दूंगा। फ़ौज के अफ़सर तो उसके बस में हो गये थे अपनी मेम और बच्चों को भी उस के हवाले कर दिया॥ दसवीं को तंगतारीक घाटे में जो शायद उस फट भी चौड़ा नहीं है। नाम ही उसका तंग और तारीक है॥ इतने आदमी मारे गये। कि अब कुल दो सौ सत्तर सवार सिपाही और गोलंदाज़ और चार हज़ार बहीर के आदमी बाक़ी रह गये॥ सो यह बारहवीं और तेरहवीं को जगदलक और गंडमक के घाटों में तमाम हुए। क़िस्सा कोताह साढ़े सोलह हज़ार आदमियों में जो काबुल से चले थे सिर्फ़ एक डाक्तर ब्रेडन साहिब जीते जागते जलालाबाद पहुंचे गोया इस तबाही की ख़बर पहुंचाने के लिये बच रहे॥ जलालाबाद में और ही क़िस्म का अफ़सर था। वह असली सिपाही सर राबर्ट सेल बहादुर था॥ रुपया रसद गोला बारूद सिपाह जो कुछ लड़ाई का सामान है सब कम था। मगर दिल का वह बहुत दिलेर था॥ काबुलवाले अफ़सरों का हुक्म जो क़िला ख़ाली कर देने का पहुंचा था कुछ भी ख़याल में न लाया। और अकबरख़ां से मुक़ाबला करने का मंसूबा ठाना॥ भूंचाल से क़िले की दीवार भी गिर गयी। तो उस ने देखते ही देखते फिर बना ली॥ रसद घट गयी। तो घोड़ोंके गोश्त से लोगों की भूख बुझायी॥ पर क़िला न छोड़ा। अकबरख़ां ने छ हज़ार फ़ौज लेकर इस क़िले पर हल्ला किया पर सर राबर्ट सेल बराबर उस का दांत खट्टा करता रहा॥ उधर क़ंदहार को जेनरल नाट दबाये रहा। बहुतेरे बलवाई उस के गिर्द जमा हुए वह सब को फटकारता रहा॥ ग़ज़नी में कर्नेल पामर था। अगर वह शहर में किसी को रहने न देता कुछ न होता॥ लेकिन वह शहरवालों पर रहम कर गया। बर्फ़ के मौसिम में उन्हें बाहर निकालना इन्साफ़ न समझा॥ और यही उस के हक़ में ज़हर हुआ। शहरवालों ने शहरपनाह तोड़कर बलवाइयों को भीतर घुसा लिया कर्नेल पामर क़िले में बंद हुआ॥ क़िले में

रसद की तंगी थी ईंधन भी मौजूद न था। बर्फ़ दो दो फुट पड़ गयी थी नाचार कर्नेल पामर ने वहां के तमाम सर्दारों से इस बात की क़सम लेकर कि जब तक बर्फ़ से राह बंद है सर्कारी सिपाह शहर में रहे और राह खुलने पर सर्दार लोग उसे हिफ़ाज़त से पिशावर तक पहुंचा दें क़िला ख़ाली कर दिया। लेकिन जब बलवाई दूसरे ही दिन इन पर हमला करने लगे। सिपाहियों ने घबराकर रात के वक़्त शहरपनाह में छेद किया और सब के सब बाहर निकल पड़े। उन्हें यह ख़याल था कि पिशावर पच्चीस या तीस कोस है धावा मारकर चले जायेंगे लेकिन बर्फ़ में क़दम कब उठ सकता था। सुबह होते ही सब के सब मारे और पकड़े गये अंगरेज़ों ने अपने तईं फिर नयी क़समें लेकर सर्दारों के हवाले कर दिया।

लार्ड येलनबरा

इस अर्से में लार्ड अकलैंड विलायत चला गया। और लार्ड येलनबरा आख़िर फ़ेब्रुअरी में उस की जगह गवर्नर जेनरल १८४२ ई० मुक़र्रर होकर आया। लार्ड अकलैंड ने जाने से पहले जलाला-बादवालों की कुमक के लिये पिशावर में फ़ौज जमा होने का हुक्म जारी कर दिया था। लेकिन अब एक दफ़ा फिर काबुल तक जाना और अफ़ग़ानों को सर्कारी फ़ौज का ज़ोर दिखला देना बहुत मुनासिब समझा गया। यह फ़ौज अप्रेल में जेनरल पालक के साथ पिशावर से काबुल की तरफ़ रवाना हुई पालक साहिब घाटों में पहले ही से कुछ कम्पनियां पलटनों की दुतरफ़ा पहाड़ों पर चढ़ा देते थे। इस बाइस अफ़ग़ान ऊपर से गोलियां नहीं चला सकते थे अगर चलाने को जमा भी होते सर्कारी सिपाही उन की ख़ूब ख़बर लेते थे। सोलहवीं अप्रेल को जलालाबाद में दाख़िल हुए। क़िलेवालों के गोया सूखे हुए खेत फिर लहलहाये। अगस्त तक फ़ौज उसी जगह ठहरी रही। अगस्त में फिर आगे बढ़ी। रास्ते में अकबरख़ां ने सोलह हज़ार अफ़-ग़ानों के साथ सर्कारी फ़ौज का मुक़ाबला किया लेकिन कुछ पेश न गयी भागना पड़ा। पंदरहवीं सितम्बर को सर्कारी फ़ौज

काबुल में दाख़िल हुई और सोलहवीं को बालाहिसार पर सर्कारी निशान चढ़ाया॥ शाहशुजा को नव्वाब ज़मांख़ां के बड़े बेटे ने मार्च ही महीने में मार डाला था शुजा बालाहिसार से निकल कर उस के साथ अपने लश्कर की तरफ़ जाता था उस ने रास्ते में उस पर दुनाली बंदूक़ चला दी। पस अब सर्कारी फ़ौज को सिर्फ़ अपने क़ैदियों की रिहाई बाक़ी रह गयी॥ सिवाय इस के और कुछ भी अफ़्ग़ानिस्तान में काम न था उधर सिंध से कुछ फ़ौज लेकर जेनरल इंगलैंड जेनरल नाट की कुमक को क़ंदहार पहुंच गया था लेकिन जेनरल नाट ने बहुत से आदमी जेनरल इंगलैंड के साथ सिंध को लौटा दिये सिर्फ़ थोड़े से चुने हुए सिपाही लेकर जेनरल पालक से शामिल होने को काबुल की तरफ़ कूच किया। वह यही कहता था कि एक हज़ार सर्कारी सिपाही पांच हज़ार अफ़्ग़ानों के भगाने को बहुत काफ़ी हैं निदान जेनरल नाट भी लड़ता भिड़ता अफ़्ग़ानों को हर तरफ़ मारता भगाता रास्ते में ग़ज़नी का क़िला तोड़ता फोड़ता महमूद ग़ज़नवी के मक़्बरे से सोमनाथ के संदली किवाड़ लेता सत्तरहवीं सिप्तम्बर को काबुल में आ दाख़िल हुआ॥ अकबरख़ां ने तमाम अंगरेज़ मेम और बाबा लोगों को लो उस के क़ाबू में थे एक अफ़्ग़ान सालिहमुहम्मदख़ां के साथ बामियान् की तरफ़ भेज दिया था उस का इरादा था कि इन्हें तुहफ़ा के तौर पर ग़ुलामी के लिये तूरानी सर्दारों को बांट दे। लेकिन सालिहमुहम्मद इन से मिल गया बीस हज़ार नक़्द और हज़ार रुपये माहवारी पिंशन के वादे पर सही सालिम सर्कारी फ़ौज में पहुंचा दिया जेनरल एलफ़िंस्टन मर गया था तो भी सिवाय साहिब लोगों के लेडी मेकनाटन और लेडी सेल समेत तेरह मेम और उन्नीस लड़के इन क़ैदियों में थे॥ निदान इन क़ैदियों को लेकर सर्कारी फ़ौज फ़तह फ़ीरोज़ी के निशान उड़ाती फ़ीरोज़पुर चली आयी गवर्नर जेनरल ने दोस्तमुहम्मद को भी छोड़ दिया। सर्कार का इस लड़ाई में कम से कम सत्तरह करोड़ रुपया ख़र्च पड़ा॥

सिन्ध के अमीरों से सन् १८३२ में सर्कार का यह अहद पैमान होगया था कि सिन्ध नदी की राह बेशक सर्कारी आदमी आवें जावें। लेकिन न कोई जंगी जहाज़ उस में लावे और न लड़ाई का सामान उधर से कहीं को ले जावे॥ सन् १८३८ में यह भी ठहर गया कि एक सर्कारी रज़ीडंट वहां रहा करे। लेकिन जब सर्कार को मालूम हुआ कि ये अमीर ईरान के बादशाह से खत किताबत करते हैं लार्ड अकलैंड ने सर्कारी फ़ौज काबुल जाने के वक़्त उन से एक अहदनामा इस मज़मून का लिखवा लिया कि कुछ किसी क़दर सर्कारी फ़ौज उन के मुलाक़े में रहा करे और उस का ख़र्च उन्हीं के ज़िम्मे रहे॥ अमीर इस पर भी अपनी हर्कत से बाज़ न आये। काबुल की लड़ाइयों में सर्कार के दुश्मनों से साज़िश करने लगे॥ और सर्कार को यह भी ख़बर पहुंची कि सिन्धु नदी पर अहदनामे के ख़िलाफ़ महसूल लगाते हैं निदान सन् १८४२ में लार्ड एलनबरा ने उन से इस मज़मून का अहदनामा तलब किया कि फ़ौज ख़र्च के बदल वह कुछ मुल्क सर्कार की नज़र करें सिक्का सर्कार का जारी करें। और जो घूगं की नाव सिन्धु नदी में चलें उन के लिये जलाने को लकड़ी दें न दें तो नाववाले जहां जो पेड़ पावें काट लें॥ अमीरों ने इस अहदनामे पर भी मुहर कर दी लेकिन उन के बलूची सर्दार इस बात से बहुत नाख़ुश हुए मेजर जटरम वहां रज़ीडंट था। और सर चार्लस नेपिअर वहां के इन्तिज़ाम के लिये कुछ फ़ौज लेकर सिन्ध की राजधानी हैदराबाद के पास पहुंच चुका था॥ अमीरों ने मेजर जटरम से साफ़ कह दिया कि सर चार्लस नेपिअर अगर हैदराबाद की तरफ़ बढ़ेगा बलूची बलवा करेंगे सर चार्लस नेपिअर कब रुकनेवाला था। पन्द्रहवीं फ़ेब्रुअरी को बलूचियों ने बलवा किया और रज़ीडंटी १८४३ ई०
को जा घेरा॥ रज़ीडंट तो अपने आदमियों समेत नदी में घूगं की नाव पर चला गया। लेकिन असबाब का बहुत नुक़सान हुआ॥ जब सर चार्लस नेपिअर हैदराबाद से तीन कोस पर मियानी में पहुंचा देखा कि अमीरों की फ़ौज बीस हज़ार से ज़ियादा बहुत

मज़बूती के साथ पड़ी है इस की सिपाह तीन हज़ार से भी कम थी लेकिन शेर क्या गीदड़ों की गिनती से हिचकता है फ़ौरन हमला कर दिया सख़्त लड़ाई हुई। अमीरों की फ़ौज ने शिकस्त पायी। पांच हज़ार खेत रहे बाक़ी भाग गये। सर्कारी कुल बासठ आदमी काम आये। लड़ाई के बाद छ अमीरों ने अपने तई सर चार्लस नेपिअर के हवाले कर दिया। और वह फ़तह फ़ीरोज़ी के साथ हैदराबाद में दाख़िल हुआ। दूसरे महीने में सर चार्लस नेपिअर ने इसी तरह उव्बा की लड़ाई में मीरपुर के अमीर को शिकस्त देकर मीरपुर में दख़ल किया। और कुछ सवार सिपाही भेजकर अमरकोट का मज़बूत क़िला ले लिया। जो कोई अमीरों में से इधर उधर बच रहा था धीरे धीरे हर एक सर्कार की क़ैद में चला आया। और सिन्ध बिल्कुल सर्कारी अमल्दारी में शामिल होगया।

इसी साल के अंदर ग्वालियर में दौलतराव सेंधिया का जानशीन जनकूजीराव सेंधिया बे औलाद मर गया। उस की रानी ताराबाई ने जो ख़ुद तेरह बरस की थी एक अपना रिश्तेदार लड़का आठ बरस का जयाजीराव गोद लेकर उसे गद्दी पर बिठा दिया साहिब रज़ीडंट की सलाह से महाराव का मामू यानी मामा साहिब राज का काम अंजाम देने लगा। लेकिन दादा ख़ासगीवाले ने रानी से मिलकर मामा साहिब को निकलवा दिया और काम सब अपने हाथ में लिया। साहिब रज़ीडंट ने यह हाल देखकर धौलपुर की अमल्दारी में डेरा जाकिया। सेंधिया की फ़ौज में फूट पड़ी कुछ लोग तो दादा ख़ासगीवाले की तरफ़ थे। और कुछ बापू सितोलिया की तरफ़ दो दिन तक आपस में गोले चलते रहे आख़िर रानी ने फ़ौज को आपस की लड़ाई से रोका। दादा ख़ासगीवाला क़ैद करके आगरे भेजा गया और बापू सितोलिया दीवान हुआ। इस अर्से में गवर्नर जेनरल का लश्कर ग्वालियर की सर्हद पर पहुंच गया था। लार्ड एलनबरा ने ऐसा अच्छा मौक़ा इस ग्वालियर की तरफ़ का खटका मिटाने का हाथ से जाने देना मुनासिब न समझा क्योंकि उधर

पंजाब में भी फ़साद उठनेवाला मालूम होता था। ग्वालियरवालों से साफ़ कहला भेजा कि अगर सुलह रखनी मंज़ूर है तो ग्वालियर में सर्कारी कांटिंजेंट की फ़ौज बढ़ा दो। और उस के ख़र्च के लिये कुछ इलाक़े सर्कार के हवाले करो। और फिर साथ ही इस मज़मून का इश्तिहार देकर कि सर्कारी फ़ौज महाराज की हिफ़ाज़त के लिये आयी है ग्वालियर की तरफ़ कूच किया। उन्तीसवीं दिसम्बर को महाराजपुर और पनिआर में सेंधिया की फ़ौज से मुक़ाबला हुआ। ख़ूब सख़्त लड़ाई हुई। सेंधिया की फ़ौज ने हर तरफ़ से शिकस्त खायी। पांचवीं जनवरी को १८४४ ई० गवर्नर जेनरल ग्वालियर में दाख़िल हुए सेंधिया ने नया अहदनामा लिख दिया कि जब तक वह अठारह बरस का न हो काम राज का रज़ीडंट की सलाह मुताबिक़ अहलकार अंजाम दें। कांटिंजेंट की फ़ौज बढ़ा दी जाय उस के ख़र्च के लिये कुछ इलाक़े सर्कार जुदा कर ले महाराज की सिपाह नौ हज़ार से कभी ज़ियादा न होने पावे और तोप बारह जंगी और कुल बीस ऐसी वैसी रहें। लार्ड एलनबरा ग्वालियर की मुहिम्म ते करके कलकत्ते मुड़ गया लेकिन वहां विलायत से उस की बदली का हुक्म आया। उस की जगह पर सर हेनरी हार्डिंग गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ॥

सर हेनरी हार्डिंग (लार्ड हार्डिंग)

रंजीतसिंह लार्ड अकलेंड की मुलाक़ात के बाद ही बीमार पड़ा। और सत्ताईसवीं जून को (सन् १८३९) शाम के वक़्त होश हवास के साथ ५८ बरस की उमर में परलोक को सिधारा॥ हक़ीक़त में इस आख़िरी ज़माने के दर्मियान इस मुल्क में यह बहुत बड़ा और नामी आदमी हो गुज़रा इसका दादा चतरसिंह सुकरचक नाम गांव के रहनेवाले नोधासिंह सांसी जाट का बेटा गुजरांवाले में एक कच्ची गढ़ी सी बनाकर रहा करता था। और काम पड़ने से पच्चीस सौ सवार जमा कर सकता था। रंजीतसिंह ने अपना मुल्क सिंध की सहद से चीन की अमल्दारी तक पहुंचा दिया। और ख़ैबर के घाटे से सतलज

तक बिलकुल अपने क़ब्ज़े में कर लिया। इस में से कुछ ऊपर करोड़ रुपये का लोगों को जागीर और मुआफ़ी में दे रक्खा था। और बाक़ी की आमदनी का तख़मीनन डेढ़ करोड़ रुपया उस के ख़ज़ाने में आता था। मरते वक़्त उस ने दान पुण्य भी खूब किया। करोड़ रुपये से ज़ियादा तो जिस रोज़ वह मरने को था उसी रोज़ ख़ैरात हुआ। और तमाशा यह कि लिखना पढ़ना वह कुछ नहीं जानता था। सिर्फ़ नाम भर लिख सकता था। और आंख भी एक ही रखता था एक चीतला में जाती रही। लेकिन आदमी की पहचान भगवान ने इसे ऐसी दी। कि विक्रम भोज और अकबर के बाद शायद इसी के दर्बार में नवरत्न गिने जा सकते थे। जब उस की लाश को गंगाजल से नहलाकर चंदन के बिमान पर जो सोने के फूलों से सजा हुआ था जलाने को ले चले। चार रानियां अच्छी से अच्छी पोशाकें और ज़ेवर पहने हुए उस के साथ गयीं। रानी कुंदन रजपूत राजा संसारचन्द कांगड़ेवाले की बेटी महाराज का सिर गोद में लेकर चिता पर बैठ गयी बाक़ी तीनों जिनमें दो सोलह सोलह बरस की निहायत ख़ूबसूरत थीं पांच सात लौंडियों के साथ उस के चौगिर्द जा बैठीं। इन सब के चिहरों पर रंज का निशान कुछ भी न था बल्कि ख़ुशी का असर मालूम होता था। ग़रज़ एक समां देखनेवालों के दिल को क़लक़ दिलाने का था। निदान चिता में आग लगायी गयी। और देखते ही देखते वह राख की ढेरी हो गयी। कहते हैं कि जब चिता जलती थी एक टुकड़ा बादल का नमूदार हुआ और कुछ बूंदें पानी की बरस गया। गोया ख़ुद आसमान महाराज के मरने से रोया। रंजीतसिंह के बाद उसका बेटा खड़गसिंह उस की गद्दी पर बैठा। खड़गसिंह अपने बाप के पुराने वज़ीर राजा ध्यानसिंह से किसी सबब नाराज़ हो गया। ध्यानसिंह ने उस के बेटे नौनिहालसिंह को ऐसा उभारा। कि उस ने खड़गसिंह को नज़रबंद कर लिया और राज काज सब आप करने लगा। खड़गसिंह थोड़े ही दिनों में बीमार होकर मर गया। कौन जाने ज़हर दिया या ख़्याल ही बुरा किया। जो हो

जब उसे जलाकर नौनिहालसिंह घर की तरफ़ फिरा। रास्ते में एक दर्वाज़ा टूटकर ऐसा उस पर गिरा कि वह भी अपने बाप के पास सिधारा॥ उस के साथ राजा ध्यानसिंह का भतीजा मीयां उत्तम-सिंह भी वहां काम आया। कहते हैं कि यह सारा करतूत ध्यानसिंह और उस के भाई गुलाबसिंह का था॥ लेकिन दर्वाज़ा गिरने का असली सबब आज तक किसी को नहीं मालूम हुआ। सिक्खों ने अपने दस्तूर बमूजिब खड़गसिंह की रानी चन्द-कुंअर को मुल्क का मालिक बनाया॥ और गुलाबसिंह भी उसी की जानिब रहा। लेकिन ध्यानसिंह ने फ़ौज को खड़गसिंह के भाई शेरसिंह से मिला दिया॥ चन्दकुंअर क़िले में बंद हुई फ़ौज ने चारों तरफ़ से घेर लिया। पांच दिन तक दोनों तरफ़ से ख़ूब गोला चला॥ गुलाबसिंह भीतर ध्यानसिंह बाहर था। जी में दोनों एक लोगों के दिखलाने को यह सवांग रचा था॥ आख़िर इस बात पर सुलह ठहरी कि शेरसिंह गद्दी पर बैठे। चन्दकुंअर को नौ लाख की जागीर दे॥ उसे कभी अपनी रानी बनाने का इरादा न करे। और गुलाबसिंह अपनी फ़ौज समेत निशान उड़ाता क़िले से बाहर चला जावे कोई कुछ रोक टोक न करे॥ कहते हैं कि गुलाबसिंह ने अपनी सोलह तोपों की सोलह पेटियां एक एक तोप के लिये तीस तीस कारतूस रख कर बाक़ी बिल्कुल रुपयों से भरीं और पांच सौ तोड़े अशरफ़ियों के अपने पांच सौ जवानों के हाथ में थमा दिये जवाहिर जिस क़दर हाथ लगा अपनी अर्दली के घुड़चढ़ों को सपुर्द किया। और भी बहुत सा क़ीमती असबाब लिया॥ क़िले से निकलकर शाहदरे के नज़्दीक डेरा किया। फिर कुछ दिनों बाद शेर-सिंह से रुख़सत लेकर अपनी जागीर जम्मू की तरफ़ चला गया॥ ध्यानसिंह ने यह समझा कि शेरसिंह को मैं ने ही गद्दी पर बिठाया और शेरसिंह ने यक़ीन जाना कि जब तक ध्यानसिंह रहेगा मैं नाम ही का महाराज हूं यह बिल्कुल इख़्तियार अपने हाथ में रक्खेगा। मुझे हर तरह से धमकावे और दबावेगा॥ दिलों में फ़र्क़ आया। एक को दूसरे

की तरफ़ से खटका पैदा हुआ। सिंधांवालों ने इस क़ाबू को अपना दिली मतलब पूरा करने के लिये बहुत ग़नीमत पाया रंजोतसिंह की औलाद के बाद गद्दी का हक़ ये अपना समझते थे। और शेरसिंह से नाराज़ भी हो रहे थे। एक रोज़ लहनासिंह और अजीतसिंह दोनों सिंधांवाले भाइयों ने अकेले में महाराज के पास जाकर यह गुल कतरा कि पृथिवीनाथ हम को ध्यानसिंह ने आप की जान लेने के लिये भेजा है। और इस ख़िदमत की ग़रज़ साठ लाख रुपये की जागीर देने का वादा किया है। उस का इरादा है कि आप को मारकर दलीपसिंह * को गद्दी पर बिठावे। और जब तक वह बड़ा न हो रियासत का काम बेखटके आप किया करें। लेकिन हमने अपने नमक की शर्त से अदा होने के लिये आप को इस बेवफ़ा वज़ीर के बद इरादों से अच्छी तरह चिता दिया आगे आप मालिक हैं शेरसिंह इस बात के सुनने से ज़रा भी न घबराया और अपनी तलवार दोनों सिंधांवाले सर्दारों के सामने रख कर बोला। कि अगर तुम मेरे मारने को आये हो तो लो मैं अपनी तलवार देता हूँ तुम बेशक मुझ को मार डालो मगर याद रक्खो कि जिस तरह अब वह तुम से मुझे क़तल करवाता है बहुत रोज़ न गुज़रेंगे कि तुम्हें भी क़तल करवा डालेगा। सिंधांवालों ने अर्ज़ किया महाराज हम तो आप को मारने को नहीं बल्कि बचाने को आये हैं लेकिन ऐसे नमकहराम वज़ीर को तो अब छोड़ना मुनासिब नहीं ग़रज़ सिंधांवालों ने शेरसिंह से ध्यानसिंह के मारने की इजाज़त लिखवा ली और वहां से यह कह कर रुख़्सत हुए कि अब हम अपनी जागीर पर जाते हैं वहां से अपने सिपाहियों को लेकर हाज़िरी देने के बहाने आप के पास आवेंगे। आप उस वक़्त ध्यानसिंह को हमारे सिपाहियों की मोजूदात लेने के लिये हुक्म दीजियेगा हमारे सिपाही उस को और

* रानी चन्दा से रंजोतसिंह का बेटा उस वक़्त निरा बालक था।

उस के बेटे हीरासिंह दोनों को गोली से मार देंगे॥ फिर ये लोग ध्यानसिंह के पास गये। और उस को वह काग़ज़ दिखलाया जो शेरसिंह ने उस के मारने के लिये लिख दिया था ध्यानसिंह बहुत घबराया लेकिन जब सिंधांवालों ने इक़रार किया कि तेरे लिये हम महाराज ही को मार डालेंगे तब तो उस ने इन के साथ बहुत से वादे किये॥ इन्हों ने यहां महाराज के मारने की भी वही जुगत ठहरायी। कि जो महाराज के सामने ध्यानसिंह को क़तल करने के लिये ठहरायी थी॥ निदान दूसरे रोज़ सिंधांवाले अपनी जागीर को गये। और थोड़े ही दिनों में वहां से पांच छ सौ सवार अच्छे मुस्तइद हथियारों में डूबे हुए मरने मारनेवाले ले आये॥ ध्यानसिंह तो उन दिनों में बीमारी का बहाना करके अपने घर बैठ रहा था और महाराज बाग़ों की सैर में मशगूल थे। वह तारीख़ महीने की पहली थी इसलिये दर्बार न था महाराज कुश्ती देखकर पहलवानों को इनआम और रुख़सत दे रहे थे॥ कि यकबारगी सिंधांवालों ने आकर वाह गुरुजी की फ़तह सुनायी। महाराज बहुत मिहर्बानी से उन की तरफ़ मुतवज्जिह हुए अजीतसिंह ने एक दुनाली बंदूक़ जिस की हर एक नली में दो दो गोलियां भरी थीं पेश करके हंसते हुए यह बात कही॥ कि महाराज देखो चौदह सौ रुपये में कैसी सस्ती एक उमदा बंदूक़ मैं ने ली है अब अगर कोई तीन हज़ार भी देवे तो मैं उस को नहीं देने का। और जब महाराज ने बंदूक़ लेने के लिये हाथ बढ़ाया अजीतसिंह ने उन की छाती पर ले जाकर उसे झोंक दिया॥ शेरसिंह गोलियों के लगते ही बेदम होकर गिर पड़ा। सिर्फ़ इतना ही ज़ुबान से निकलने पाया "ए की दग़ा"॥ * क़ातिल महाराज का सिर काटकर उस जगह पहुंचे जहां महाराज का बड़ा बेटा तेरह चौदह बरस का कुंवर प्रतापसिंह था। लहनासिंह सिंधांवाले ने तलवार उठायी कुंवर उसके पैरों पर गिर पड़ा॥ इस संगदिल ने एकही झटके

* यानी यह कैसी दग़ाबाज़ी है॥

में उस का काम तमाम किया अजीतसिंह तो उसी दम ३०० सवार और २५० पैदल लेकर लाहोर की तरफ़ दौड़ा । और लहनासिंह बाक़ी दो सौ सवारों के साथ धीरे धीरे उस के पीछे रवाना हुआ । आधे रास्ते पर ध्यानसिंह भी जो शेरसिंह के पास जाता था अजीतसिंह को मिलगया । अजीतसिंह ने उसे रोका । और कहा कि काम बिल्कुल ख़ातिर ख़ाह अंजाम हुआ अब आप क़िले में चलकर बंदोबस्त फ़र्माइये । और अपने वादों को पूरा कीजिये । जब ये लोग क़िले के अंदर पहुंचे अजीतसिंह का इशारा पाकर एक सिपाही ने राजा ध्यानसिंह को गोली मार दी अजीतसिंह ने शहर में मुनादी करायी कि दलीपसिंह महाराज है और लहनासिंह सिंधांवाला उस का वज़ीर हुआ । ध्यानसिंह का बेटा राजा हीरासिंह सिंधांवालों के क़ाबू में न आया । फ़ौज को अपनी तरफ़ कर लिया सो ज़र्ब तोपें लेकर क़िला जा घेरा । तमाम रात तोपें चलती रहीं सूरज निकलते ही हीरासिंह ने क़सम खायी कि जब तक मैं अपने बाप के मारनेवालों को मरा हुआ नहीं देखूंगा खाना पीना हराम है रानी भी ध्यानसिंह की लौंडियों समेत सती होने के लिये इस अर्से में चिता पर चढ़ने को तयार थी हीरासिंह ने सिपाहियों से पुकार कर कहा कि रानी तब सती होवेगी जब उस के मालिक के मारनेवालों का सिर काटकर उस के पैरों में रक्खा जावेगा । फ़ौज इस बात को सुनते ही जोश में आयी । दीवार टूट गयी थी क़िले पर हल्ला कर दिया और बात की बात में अन्दर जा दाख़िल हुए अजीतसिंह का सिर काटकर ध्यानसिंह की रानी के पैरों में रक्खा वह उसे देखकर निहायत ख़ुश हुई और फिर ध्यानसिंह की कलग़ी हीरासिंह की पगड़ी में लगा कर आप तेरह औरतों समेत सती हो गयी । लहनासिंह सिंधांवाला मारा गया फ़ौज लैन को चली गयी । दलीपसिंह महाराज और हीरासिंह वज़ीर के
१८४३ ई० नाम से डौंडी फिरी । थोड़े ही दिनों के बाद राजा हीरासिंह और उस के मोतमद पंडित जल्ला की बाज़ी बातें ऐसी ज़ाहिर

होने लगी कि फ़ौज का दिल उन से हट गया। हीरासिंह ने सिक्खारी छोड़कर जम्मू की तरफ़ भाग जाने का इरादा किया और फ़ौज की क़वाइद देखने के बहाने से शहर के बाहर निकला। मगर शाहदरे से पांच सौ क़दम भी आगे न बढ़ा होगा कि सिख सवारों ने पहुंचकर घेर लिया। और यह कहा कि तू पंडित जल्ला को हमारे हवाले कर दे लेकिन पंडित ने अपनी जान बचाने के लिये आगे ही बढ़ने का इशारा किया और सिक्खों का कहना कुछ भी न सुनने दिया। जब दस बारह कोस निकल गये और दिन क़रीब दो पहर के आया क़िस्मत का मारा पंडित जल्ला घोड़े से गिर पड़ा। सिक्खों ने उसी दम उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला। हीरासिंह प्यास की शिद्दत से पानी पीने के लिये एक गांव में उतरा सिक्खों ने गांव में आग लगा दी और हीरासिंह को उसी जगह क़तल किया हीरासिंह का सिर लाहौरी दर्वाज़े पर लटकाया गया। और पंडित जल्ला का सिर तमाम शहर में फिराने के बाद कुत्तों को खिलाया गया। निदान हीरासिंह के मारे जाने पर दलीप-सिंह का मामू जवाहिरसिंह वज़ीर हुआ। लेकिन इसी अर्से में कुंवर पिशोरासिंह ने बिगड़कर अटक का क़िला जा दबाया। जवाहिरसिंह के आदमियों ने पहले तो दम दिलासा देकर उसे क़िले से बाहर निकाला। और फिर रात के वक़्त मारकर अटक के दर्या में डुबा दिया। कुंवर पिशोरासिंह महाराज रंजीत-सिंह के लड़कों में से था। बहादुरी के बाइस फ़ौज का प्यारा था। इस के मारे जाने की ख़बर ज़ाहिर होते ही तमाम सिपाह के दिल में ग़ुस्से की आग भड़क उठी छब्बीसवीं सितम्बर सन् १८४५ को सारा लश्कर दिल्ली दर्वाज़े के नज़दीक आ पड़ा १८४५ ई०
निदान जब जवाहिरसिंह ने देखा कि जान नहीं बचती महाराज दलीपसिंह को गोद में लेकर हाथी पर सवार हुआ और अपनी बहन यानी दलीपसिंह की मा रानी चंदा को भी जुदा हाथी पर सवार कराकर अपने साथ लिया। लेकिन जब सवारी फ़ौज के मुक़ाबिल पहुंची सिपाहियों ने उसके हाथी को

रोका और फ़ीलवान के धमका कर ज़बर्दस्ती बैठवा दिया । महाराज को उस की गोद से छीन लिया । और उस का काम गोली और संगीनों से उसी जगह तमाम किया ॥ इस वज़ीर के मरने पर पंजाब के दर्मियान पूरी बदअमली फैल गयी और फिर वहां कोई और वज़ीर मुक़र्रर न हुआ । रानी चंदा का सलाहकार राजा लालसिंह रहा ॥ बिल्कुल काम काज उसी के कहने मुताबिक़ होने लगा । पर अख़्तियार सब बात में फ़ौज का था ॥ और फ़ौज को इस क़दर सामान लड़ाई का मौजूद होते हुए बे शग़ल ख़ाली बैठे रहना पसंद न था । बैठे बिठाये जैसे किसी का सिर खुजलाता है ख़ाहमख़ाह सर्कार अंगरेज़ बहादुर से लड़ना विचारा ॥ बहुत लोग यह भी कहते हैं कि मंसूबा इस लड़ाई का रानी और सर्दारों ने उठाया था । और फ़ाइदा उस में यह सोचा था ॥ कि इस तरह तो फ़ौज लाहौर में कभी चुपचाप नहीं बैठी रहेगी । जैसे इतने राजा और सर्दारों को मार डाला अब जो बाक़ी रह गये हैं उन के ख़ून से दिल बहलावेगी ॥ इस से बिहतर यही है कि ये लोग अंगरेज़ों से लड़ें अगर सिक्खों की फ़तह हुई तो बेशक यह कलकत्ते तक अंगरेज़ों का पीछा करते हुए चले जावेंगे जल्द लाहौर को न फिरेंगे । और जो इन की शिकस्त हुई और अंगरेज़ों के हाथ से मारे गये तो साहिबान आलीशान किसी की जान के ख़ाहां नहीं सब के पिंशन मुक़र्रर हो जावेंगे ॥ ग्वालियर की नज़ीर बहुत दिल पिज़ीर थी बचे हुओं ने अपनी जान का बचाव इसी में देखा कि फ़ौज लाहौर से निकल जावे । और अंगरेज़ों से लड़ पड़े ॥ निदान फ़ौज को अंगरेज़ों पर चढ़ाई करने का हुक्म जारी हो गया । लार्ड हार्डिंग इस भरोसे पर कि दोनों सर्कारों के दर्मियान सुलह और दोस्ती का अहदनामा बक़रार और क़ाइम था बिल्कुल ग़ाफ़िल रहा ॥ यहां तक कि राजा लालसिंह ने अपने बाईस हज़ार घुड़चढ़े और चालीस तोपों के साथ तेईसवीं नवम्बर को लाहौर से कूच किया । और सर्दार तेजसिंह भी सोलहवीं दिसम्बर को फ़ौज समेत वहां से चलकर उस से आ शामिल

हुआ। जब कि गवर्नर जेनरल को ख़बर पहुंची कि सिक्खों की फ़ौज फ़ीरोज़पुर के सामने आन पड़ी तो इधर से भी दौड़ादौड़ पल्टन और रिसालों का कूच होना शुरू हुआ। और अम्बाला* के डेरों से गवर्नर जेनरल ने लड़ाई का इश्तिहार जारी कर दिया। सिक्खों की फ़ौज जो इस पार उतरी थी। अस्सी हज़ार से कम न थी। तेजसिंह और लालसिंह दोनों ने चाहा कि फ़ीरोज़पुर पर हमला करें लेकिन फ़ौज ने क़बूल न किया उन के दिल में यह बात समा रही थी कि फ़ीरोज़पुर के क़िले में अंगरेज़ों ने सुरंगें खोद कर बारूद बिछा रक्खी है जिस वक़्त सिक्ख लोग हमला करेंगे। बारूद में आग लगा देवेंगे। ग़रज़ कई रोज़ तक इसी तरह चुपचाप फ़ीरोज़पुर के सामने डेरा डाले पड़े रहे। पर जब सुना कि अंगरेज़ों फ़ौज का उन की तरफ़ कूच हुआ तो वे भी वहां से अम्बाले की तरफ़ रवाना हुए। अठारहवीं दिसम्बर को तीसरे पहर जब कि राजा लालसिंह बारह हज़ार सवार और चालीस तोपों के साथ बढ़कर मुदकी से दो कोस के फ़ासिले पर आन पहुंचा अंगरेज़ी फ़ौज बड़ा लंबा कूच ते करके मुदकी में पहुंची थी अभी डेरे भी खड़े नहीं हुए थे सिपाही लोग हाथ मुंह धोने और रोटी पकाने की फ़िक्र में थे। गवर्नर जेनरल और कमांडरइनचीफ़ दोनों यह ख़बर सुनते ही अपने अपने घोड़ों पर हो गये। और लश्कर में बिगुल लड़ाई का बजवा दिया। जिस दम अंगरेज़ी फ़ौज झपट कर सिक्खों से मुक़ाबिल हुई गर्द उड़ने के सबब अपना और बिगाना कोई भी नहीं सूझता था। सिक्ख लोग जो पहले ही से झाड़ियों की ओट में छुप रहे थे। फ़रसत के साथ अंगरेज़ी सवारों को अपनी बंदूक़ का निशाना बनाते थे। जेनरल सेल जलालाबादवाले और और कई बड़े अंगरेज़ इस लड़ाई में मारे गये। पर आख़िर अंगरेज़ों के सामने सिक्ख लोग कहां तक ठहर सकते थे गोटड़ों की तरह शेर के सामने से भागने लगे। और खेत साहिबान ग़ाली-

* अम्बाले के पास है।

ज्ञान के हाथ रहा। इक्कीसवीं दिसम्बर को अंगरेज़ी फ़ौज ने सिक्खों के मोरचों पर जो उन्हों ने फेरू * के पास जमाये थे हमला कर दिया। उस रोज़ रात को भी लड़ाई होती रही और मेजर लाडफुट अम्बाले का अफ़सर उसी लड़ाई में काम आया। लेकिन सवेरा होने के पहले ही दुश्मनों में से वहां एक भी बाक़ी न रहा। बहुत से तो उसी जगह अंगरेज़ी सिपाहियों के हाथ से कट मरकर मिट्टी में मिले और जो बाक़ी रहे सब के सब सतलज की तरफ़ चले। सुबराँव के पास हरी के पत्तन पर पहुंच कर डेरा डंडा तो अपना सतलज के दहने कनारे रक्खा और आप लड़ने के लिये सतलज के बायें कनारे रहे। सतलज में नावों का पुल बना लिया था सर्कारी फ़ौज भी उसी जगह उनके मुक़ाबिल जा पड़ी। और महीने भर से ऊपर दोनों फ़ौज इसी तरह से लड़ाई पड़ी रही। अंगरेज़ लोग तो अपने बड़े क़िला-शिकन तोपख़ाने के जिसे अंगरेज़ी में सीजट्रेन् कहते हैं पहुंचने के इन्तिज़ार में थे। और सिक्ख लोग इस भरोसे पर थे कि अब ये दबकर सुलह कर लेंगे। इसी अर्से में जेनरल सर हारीस्मिथ ने लुधियाने के नज़दीक अलीवाल में सर्दार रंजोर-सिंह को जिस ने वहां कुछ सिक्ख जमा किये थे मार हटाया। और राजा गुलाबसिंह तीन हज़ार आदमियों के साथ जम्मू से लाहौर में दाख़िल हो गया। निदान दसवीं फ़ेब्रुअरी सन् १८४६ को नूर के लड़के सर्कारी फ़ौज ने सिक्खों पर जो अपने मोरचों
१८४६ ई० के अंदर † ग़ाफ़िल पड़े हुए थे हमला किया। और थोड़ी ही देर की सख़्त लड़ाई में उन का पैर मैदान से उखाड़ दिया। ऐसी घबराहट के साथ भागे। कि उन के हुजूम से पुल भी टूट गया आधे से ज़ियादा आदमी सतलज में डूबकर मरे। ग़रज़ यह लड़ाई बड़ी भारी हुई। और इसी लड़ाई के हारने

* इस गांव का असली नाम फ़ीरोज़शहर बतलाते हैं और इसी को अंगरेज़ फ़ीरोज़शाह कहते हैं।

† इस किताब का बनानेवाला उस वक़्त सिक्खों के मोरचों में था सर्कार का भेजा हुआ गया था।

से सिक्खों की खुदमुख्तार सल्तनत जो रंजीतसिंह ने बड़ी मिहनत से बनायी थी हमेशा के लिये ग़ारत हो गयी। सर्कारी फ़ौज उसी रोज़ दूसरे घाट पुल बांधकर सतलज पार उतरी। और फिर कोई ग़नीम सामने न रहने से बाफ़रागत मंज़िल ब मंज़िल लाहौर की तरफ़ कूच करने लगी। कसूर के डेरों में राजा गुलाबसिंह गवर्नर जेनरल की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ। और फिर लुलियानी के डेरों में महाराज दलीपसिंह को भी ले आया। बीसवीं फ़ेब्रुअरी को सर्कारी फ़ौज के साथ गवर्नर जेनरल लाहौर में दाख़िल हुए। और नवीं मार्च को आम दर्बार में महाराज ने अपने सब सर्दारों समेत आकर नये अहदनामे पर मुहर दस्तख़त किये। इस अहदनामे की रू से लाहौर के बिल्कुल इलाक़े जो सतलज इस पार थे। जलंधरदुआब समेत सर्कार की अमल्दारी में आगये। ब्यास सरहद्द ठहरी पचास लाख रुपया लड़ाई के ख़र्च की बाबत महाराज ने नक़द अदा किया। और एक करोड़ के बदले जम्मू और कश्मीर दे दिया कि वह सर्कार ने फिर रुपया लेकर महाराजगी के ख़िताब के साथ गुलाबसिंह को इनायत फ़र्माया। जो बात रानी चंदा और उस के यार राजा लालसिंह ने गुलाबसिंह को ख़राब करने की सोची थी उसी से गुलाबसिंह की सारी बात बन गयी। क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की। जिस क़दर तोपें लड़ाई में गयी थीं। बिल्कुल सर्कार के हवाले कर दी गयीं। निदान गवर्नर जेनरल ने महाराज और महारानी के कहने मुताबिक़ कुछ थोड़ी सी फ़ौज लाहौर में रहने दी। और बाक़ी सब अपनी छावनियों को रवाना हुई। और यह भी ठहर गयी कि सिक्खों की फ़ौज में बीस हज़ार से ज़ियादा पैदल और बारह हज़ार से ज़ियादा सवार न रहें। और गवर्नमेंट की इजाज़त बिदून ग़ैर मुल्क के आदमी अफ़्सर न बनाये जावें। महाराज गुलाबसिंह ने जब कश्मीर में अपना क़ब्ज़ा करने के लिये आदमी और सिपाही भेजे वहां के सूबेदार शेख़ इमामुद्दीन ने सब को

मार कर निकाल दिया। और कश्मीर छोड़ने से इन्कार किया। लेकिन लाहौर के एजंट हेनरी लारंस साहिब जब कुछ थोड़ी सी अंगरेज़ी फ़ौज लेकर गुलाबसिंह को दख़ल दिलाने के लिये पीरपंजाल के घाटे के पास आ पहुंचे इमामुद्दीन उन के साथ लाहौर चला आया। और कश्मीर में बख़ूबी गुलाबसिंह का क़बज़ा और दख़ल हो गया। इमामुद्दीन ने गुलाबसिंह को कश्मीर न देने का सबब यह बयान किया। कि राजा लालसिंह वज़ीर ने कश्मीर छोड़ने के लिये मना लिख भेजा था बल्कि लालसिंह का मुहरी ख़त भी इस मज़मून का पेश कर दिया। लालसिंह इस क़ुसूर में विज़ारत से मौक़ूफ़ होकर नज़रबंद रहने के लिये पहले देहरे और फिर आगरे दो हज़ार पिंशन पर भेजा गया। और कारबार रियासत का सर्दार तेजसिंह सर्दार शेरसिंह सर्दार शमशेरसिंह सर्दार निधानसिंह सर्दार अतरसिंह सर्दार रंजोरसिंह दीवान दीनानाथ और ख़लीफ़ा नूरुद्दीन के सपुर्द हुआ। इस अर्से में मीआद सर्कारी फ़ौज की लाहौर में रहने की पूरी हो गयी थी। और नज़दीक था कि लाहौर छोड़कर सतलज इस पार चली आवे लेकिन सर्दारों ने यह बात न होने दी। और फ़ौज रहने के लिये सर्कार से बहुत मिन्नत की। तब नाचार सर्कार ने उनकी अर्ज़ क़बूल करके यह तजवीज़ ठहरायी। कि जब तक दलीपसिंह १६ बरस का न हो जितनी फ़ौज सर्कार मुल्क की हिफ़ाज़त के लिये काफ़ी समझे लाहौर में रक्खे। और उस का ख़र्च बाईस लाख रुपया साल लाहौर के ख़ज़ाने से मिला करे। और मुल्क का बंदोबस्त और इन्तिज़ाम साहिब एजंट बहादुर की सलाह और हुक्म मुताबिक़ होता रहे। और रानी चंदा के गुज़ारे को डेढ़ लाख रुपया साल नक़द ठहर जावे। रानी चंदा इख़्तियार घट जाने के बाइस रोज़ बरोज़ हर तरह के फ़साद उठाने लगी। और दलीपसिंह को भी बहकाने और फुसलाने लगी। यहां तक कि जिस रोज़ सर्दार तेजसिंह को राजगी का ख़िताब देना ठहरा था दलीपसिंह ने साफ़

इन्कार कर दिया कि हम उस को राजगी का तिलक नहीं करेंगे आख़िर जब सर्दारों ने देखा कि रानी लाहोर में रहकर महाराज को भी ख़राब करेगी और मुल्क में फ़ितूर डालेगी साहिब चलंट की सलाह के साथ गवर्नर जेनरल का हुक्म हासिल किया। और उसे पिंशन मुक़र्रर कर शेख़ूपुरे में जो लाहोर से १६ कोस के फ़ासिले पर है नज़रबंद कर दिया॥

लार्ड डलहौसी

लार्ड हार्डिंग अठारहवीं जनवरी सन् १८४८ को विलायत चले गये। और उन की जगह पर लार्ड डलहौसी गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हो कर आये॥

सन् १८४० के आख़िर में दीवान मूलराज मुल्तान के नाज़िम १८४० ई०
ने लाहोर में जाकर अपनी निज़ामत का इस्तेफ़ा दाख़िल किया और सबब इस का यह बयान किया कि उमर बढ़ जाने और पर्मिट का बंदोबस्त दूसरी तरह पर हो जाने से उस को नुक़सान पड़ा। और मुल्तानियों का मुराफ़ा यानी अपील लाहोर में सुने जाने से उन पर उस का पहला सा दबाव बाक़ी न रहा॥ निदान इस्तेफ़ा मंज़ूर हुआ और अगन्यू साहिब और लेफ़्टिनेंट ख़ंडर्मन साहिब इस मुराद से मुल्तान भेजे गये कि उस सूबे को मूलराज से लेकर सर्दार कान्हसिंह नये नाज़िम के सपुर्द कर दें अठारह हज़ार पियादे और सवार और ६ तोपें उन के हमराह थीं उन्नीसवीं अप्रेल सन् १८४८ को जब दोनों १८४८ ई०
साहिबों ने क़िले के अंदर जाकर बख़ूबी मुलाहज़ा कर लिया। मूलराज ने उस को उन के सपुर्द किया॥ वे गोरखाली पलटन के दो कप्तानों को क़िले में छोड़कर बाक़ी आदमियों के साथ अपने डेरों की तरफ़ लौटे। दीवान मूलराज * और सर्दार कान्हसिंह

* कहते हैं कि मूलराज साहिब के पास जाने को तय्यार था। लेकिन इसी अर्से में किसी ने उस के रिश्तेदार रंगराम को जिस ने उसे साहिब के पास जाने की सलाह दी थी बदनामी कर दिया इस बात से डरकर मूलराज अपने मकान को चला गया॥

दोनों साथ थे। क़िले के दर्वाज़े से बाहर निकलते ही किसी सिपाही ने अगन्यु साहिब को बर्छी और तलवार से घायल किया। और फिर थोड़ी ही दूर आगे अंडर्सन साहिब का भी यही हाल हुआ। मुसाहिब भाग गये। साहिबों को उन के आदमी उठाकर डेरे में लाये। दूसरे दिन सुबह को क़िले से अंगरेज़ी लश्कर पर गोले चलने लगे। शाम तक अंगरेज़ी फ़ौज के सब लोग मूलराज से जा मिले कुल पच्चीस तीस आदमी दोनों साहिबों के पास रह गये। पच्चीसवीं को मूलराज की फ़ौज ने निकलकर इन पर हमला किया। और दोनों घायल साहिबों को उसी जगह मार डाला। जब यह ख़बर लाहौर में पहुंची उसी दम कुछ फ़ौज शेरसिंह के साथ मुल्तान को रवाना की गयी। और बहावलपुर के नव्वाब को और लेफ़्टिनंट एडवार्डिस को जो उन दिनों हज़ारे की कमान पर था और फ़ीरोज़पुर की फ़ौज को हर तरफ़ से मदद के लिये कूच करने की ताकीद हुई। इसी अर्से में लाहौर के दर्मियान रानी के आदमियों ने सर्कारी फ़ौज के कुछ सिपाहियों से मिलकर इस तरह की साज़िश की कि एक ही दिन वहां सब साहिब लोगों को ज़हर दें और क़त्ल कर डालें लेकिन भेद खुल जाने के सबब रानी चंदा तो चनार के क़िले में क़ैद रहने के लिये † बनारस भेजी गयी। और उसके आदमी गंगाराम खानसिंह और गुलाबसिंह फांसी दिये गये बाक़ी मुफ़सिदों ने अपने अपने क़ुसूर के मुवाफ़िक़ सज़ा पाई गवर्नर जेनरल का इरादा था कि जाड़े तक यह मुहिम्म मुल्तवी रहे। लेकिन इक़्बाल ज़बर्दस्त क्यों ऐसा बट्टा लगे। लेफ़्टिनंट एडवार्डिस भी सरहद्द पर था बारहसो जवान और दो तोप लेकर सिंधु इस पार उतर आया। और कर्नेल कोर्टलैंड के साथ जो कुछ थोड़ी सी फ़ौज मुलतान की तरफ़ आती

† चनार के क़िले से नयपाल भागी और वहां बहुत दिनों तक महाराज जंगबहादुर के पास रहकर दलीपसिंह के साथ इंगलिस्तान गयी मरने पर उसकी लाश दाहक्रिया के लिये गोदावरी के तीर पंचवटी में आयी।

थी और नव्वाब बहावलपुर के यहां से जो कुछ थोड़ी सी फ़ौज पहुंच गयी थी शामिल करके अठारहवीं जून को किनेरी की लड़ाई में और पहली जुलाई को साटूमेन की लड़ाई में मूलराज को मार भगाया। मूलराज मुल्तान के क़िले में बंद हुआ। जेनरल व्हिश लाहोर से सात हज़ार आदमी लेकर लेफ़्टिनंट एडवार्डिस की मदद को पहुंचा और सर्दार शेरसिंह को सिक्खों की फ़ौज के साथ मुल्तान जाने का हुक्म मिला। इस बीच में शेरसिंह का बाप सर्दार चतरसिंह जो हज़ारे की कमान पर था मूलराज की जानिब होगया और अटक का क़िला लेना चाहा। चौदहवीं सितम्बर को सर्दार शेरसिंह भी अपने पांच हज़ार सिक्खों के साथ मूलराज की तरफ़ चला गया। इधर गुरुमहाराजसिंह ने कुछ सिक्ख जमा करके होशियारपुर के पास लूट मार मचा दी उधर कांगड़े के पास कई छोटे छोटे राजा बाग़ी हो गये गोया तमाम पंजाब में ग़दर मचा। शेरसिंह की जमाअत बढ़ने लगी लाहोर को कूच किया। काबुलवालों से भी साज़िश होने लगी अमीर दोस्त-मुहम्मदख़ां ने आकर पेशावर पर अपना क़ब्ज़ा किया। और वहां के अजंट मेजर लारंस को इन मुफ़सिदों ने क़ैद कर लिया।

उधर गवर्नर जेनरल बहादुर ने बम्बई से सात हज़ार आदमी को मुल्तान रवाना होने का हुक्म दिया। और अक्तूबर के आख़िर तक बंगाले का लश्कर भी फ़ीरोज़पुर में जमा होने लगा। सोलहवीं नवम्बर को चार गोरे की और ग्यारह हिन्दुस्तानी पल्टनें और तीन गोरे के और दस हिन्दुस्तानी रिसाले और ८८ तोपें लेकर कमांडरइनचीफ़ लार्डगफ़ रावी पार उतरे। बाईसवीं को चनाब पर रामनगर में और तीसरी दिसम्बर को शाहटूलहापुर में लड़ाई हुई शेरसिंह ने पीछे हट कर मेलम पर चेलियानवाले में मोरचे जमाये। यहां तेरहवीं जनवरी को बड़ी बड़ी लड़ाई हुई खेत सर्कार के हाथ रहा। लेकिन चार तोप खोई गयीं और २३७० आदमी और ८२ अफ़सरों का नुक़सान हुआ।

बम्बई की फ़ौज पहुंच जाने से जेनरल ह्विश ने मुल्तान के क़िले पर हल्ला करने की तयारी की लेकिन २० दिन लड़ कर १८४९ ई० और थक कर बाईसवीं जनवरी १८४९ को मूलराज ने क़िला हवाले कर दिया। और जेनरल ह्विश के पास चला आया॥ जेनरल ह्विश कमांडरइन्चीफ़ से जा मिला। और इस के शामिल होने से कमांडरइन्चीफ़ के पास सौ तोप के साथ बीस हज़ार का लशकर हो गया॥ शेरसिंह के पास भी गुजरात में ६० तोप और पचास हज़ार आदमियों की भीड़ भाड़ थी। बाईसवीं फ़ेब्रुअरी को लड़ाई हुई॥ सिक्खों ने शिकस्त पायी। ५३ तोप सर्कार के हाथ आयीं॥ अंगरेज़ों ने सिंध तक पीछा किया। बारहवीं मार्च को शेरसिंह और चतरसिंह ने जो कुछ रह गया था सब समेत अपने तईं जेनरल गिल्बर्ट के हवाले कर दिया॥ दोस्तमुहम्मद अपने आदमी लेकर काबुल चला गया। एक लड़का उसका यहां खेत रहा॥ गुरुमहाराजसिंह पकड़ा गया। पहाड़ी राजाओं ने भी अपने किये का फल पाया। उन्तीसवीं मार्च को गवर्नर जेनरल लार्ड डल्हौसी ने पंजाब की ज़ब्ती का इश्तिहार जारी फ़र्माया॥ ख़ज़ाना तोपख़ाना बिल्कुल सर्कार के क़ब्ज़े में आया। कोहनूर हीरा क़ैसरहिन्द अम्प्रेस विक्टोरिया को नज़र भेजा गया॥ दलीपसिंह पांच लाख रुपये साल पिंशन पर फ़तहगढ़ यानी फ़र्रुख़ाबाद गये। और वहां से ईसाई होकर इंगलिस्तान में जा रहे॥ सर्दार चतरसिंह शेरसिंह के साथ नज़रबंद रहने को कलकत्ते भेजा गया। मूलराज काले पानी यानी अंडमान टापू को रवाने हुआ लेकिन रास्ते ही में मरा॥

पंजाब की हुकूमत के लिये गवर्नर जेनरल ने बोर्ड आफ़ अडमिनिस्ट्रेशन मुक़र्रर किया उस में सर हेनरी लारेंस उन के भाई जानलारेंस और मांसल तीन मिम्बर रहे। थोड़े ही दिनों बाद मांसल की जगह सर राबर्ट मांटगमरी आ गये॥ जिस तरह लार्ड एलनबरा ने सिंध अंगरेज़ी अमल्दारी में मिलाया था लार्ड डलहौसी ने पंजाब मिलाया। लेकिन लार्ड

डलहौसी ने अपने विलायत जाने पर इस से बढ़कर ज़ियादा उमदा और बिहतर इन्तिज़ाम शायद हिंदुस्तान के और किसी हिस्से में नहीं छोड़ा।

सन् १८५२ ई० में बर्मा से दुबारा लड़ाई हुई। और १८५२ ई०
अंगरेज़ी अमलदारी पेगू तक पहुंची। हाल उसका यह है कि सन् १८२६ के अहदनामे मुताबिक़ बर्मा के बन्दरों में अंगरेज़ी सौदागरों की ख़ातिरदारी होनी चाहिये थी। लेकिन अब रंगून के हाकिम ने उनपर ज़ुल्म और सख़्ती करनी शुरू की। लार्ड डलहौसी लड़ना नहीं चाहता था लेकिन जब देखा कि बर्मावाले अक़्ल से दूर और उन को राह बतलाना निहायत ज़रूर आठ हज़ार आदमी जेनरल गाडविन के साथ रवाना किये। अपरैल सन् १८५२ में इन्हों ने बर्मावालों को शिकस्त देकर रंगून और मर्तबान उन से छीन लिया और दिसम्बर में लड़ाई ख़र्च के बदले और आगे को ऐसी हरकत से रोकने के लिये कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स के हुक्म मुताबिक़ पेगू के सब इलाक़े अंगरेज़ी अमलदारी में मिल गये गोया वहांवालों के दिन फिरे।

याद होगा कि सन् १८१८ में अंगरेज़ों ने सितारा शिवाजी की औलाद को दे दिया था। और सन् १८३९ में गद्दी नशीन राजा को ख़ारिज करके उसके भाई को बैठाना पड़ा था। यह भाई सन् १८४८ में लावलद मरा। लेकिन उसने मरते वक़्त एक लड़का गोद लिया था। कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स की राय में अहदनामे मुताबिक़ उस गोद लिये लड़के को गद्दी का हक़ नहीं पहुंचता था। पस रअय्यत के फ़ायदे की नज़र से लार्ड डलहौसी ने उस लड़के का अच्छा पिंशन मुक़र्रर करके सितारा ले लिया।

इसी तरह सन् १८५३ में राजा के मरने पर नागपुर ज़ब्ती १८५३ ई०
में आया। इसने कोई लड़का गोद नहीं लिया था तमाम इलाक़े में अंधेरखाता मच रहा था।

झांसी की ज़ब्ती का भी ऐसा ही सबब हुआ शिवराव भाऊ के साथ जो वहां पेशवा की तरफ़ से था सन् १८०४ में

अहदनामा होगया था। सन् १८१८ में जब बुंदेलखंड पेशवा से अंगरेज़ों ने लेलिया झांसी का इलाक़ा भाऊ के वारिस को बहाल रक्खा॥ उसके पोते राव रामचंद्र को सन् १८३२ में राजा का ख़िताब दिया। और उस ने सन् १८३५ में मरते वक्त एक लड़का गोद लिया॥ सर चार्लस मेटकाफ़ ने गोद लेना नामंज़ूर करके भाऊ के एक लड़के राव गंगाधर को जो तबतक जीता था गद्दी पर बिठाया। इसके वक्त में ऐसी बेइन्तिज़ामी हुई कि अठारह की जगह कुल तीन ही लाख वसूल होने लगा॥ इस ने भी सन् १८५३ में मरते वक्त एक लड़का गोद लिया लेकिन सर्कार ने मंज़ूर नहीं किया। और दूसरा कोई वारिस न रहने के सबब सारा इलाक़ा ज़ब्त कर लिया॥

उसी साल कर्नाटक भी मंदराज हाते में मिला सन् १८०१ में अज़ीमुद्दौला को वहां का नव्वाब बनाया था। लेकिन अहदनामे में "नस्लन् बाद नस्लन्" यानी मौरूसी होने का कुछ ज़िक्र नहीं था॥ सन् १८५३ में जब उसका पोता लावलद मरा आज़मजाह उसके चचा ने दावा गद्दी का किया। सर्कार ने नामंज़ूर करके उसके और उसके कुनबे के लिये अच्छा ख़ासा पिंशन मुक़र्रर कर दिया॥

सन् १८०१ के अहदनामे मुताबिक़ हैदराबाद के नव्वाब को ५००० पियादे २००० सवार और चार बाटरी तोपख़ाने का ख़र्च जो सर्कार की तरफ़ से कांटिंजंट के तौर पर वहां रहता था अदा करना चाहिये था लेकिन इस में हीला हवाला होने लगा। और रुपया बाक़ी पड़ा॥ सन् १८४३ में नव्वाब को इत्तिला होगयी कि अगर आगे रुपया बराबर अदा न होगा। कुछ इलाक़ा निकाल लिया जायगा॥ मुआमला और भी बदतर हुआ। नाचार १८५१ में लार्ड डलहौसी ने कहला भेजा कि अब इलाक़ा लेना पड़ा॥ गो नव्वाब के आदमियों ने रुपया अदा करने की कोशिश की लेकिन चूंकि ज़ाहिरा नाउमेदी मालूम हुई सर्कार ने सन १८५३ के अहदनामे मुताबिक़ फ़ौज ख़र्च के लिये बराड़ वग़ैरः इलाक़ों में अपना इन्तिज़ाम करलिया। और फिर

सन् १७९० के अहदनामे मुताबिक़ सिर्फ़ बराड़ काफ़ी समझ कर बाक़ी सब इलाक़ों को छोड़ दिया ॥

सन् १७९९ में जब लार्ड विलिज़ली ने मैसूर की रियासत फिर क़ायम की अहदनामे में यह शर्त लिख गयी थी कि जब ज़रूरत होगी सर्कार अपना इन्तिज़ाम करलेगी। सन् १८३० में जब राजा की ग़फ़लत और ज़ियादती से रअय्यत ने सर्कशी और बग़ावत इख़्तियार की लार्ड बेंटिंक ने वहां की हुकूमत अपने हाथ में लेली ॥ राजा को अहदनामे के मुताबिक़ आमदनी का रुपया जो ख़र्च से बचा हवाले किया । महसूल घटा रअय्यत को सुख चैन मिला ॥ ग़रज़ ऐसा अच्छा इन्तिज़ाम हुआ । कि जहां ४४ लाख मुश्किल से वसूल होता था ८२ लाख होने लगा ॥ लार्ड हार्डिंग से राजा ने अपने इख़्तियार की बहाली चाही। लेकिन यह बात मंज़ूर न हुई ॥ सन् १८५६ में उसने लार्ड डलहौसी से चाही । उसने भी नामंज़ूर की ॥ लार्ड डलहौसी को भरोसा कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स का था । और कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स को निरा रअय्यत के फ़ाइदे का लिहाज़ था * ॥

उसी साल यानी जिसमें नागपुर झांसी और कर्नाटक वाले लावलद मरे बाजीराव पेशवा भी बिठूर में ७७ बरस का होकर लावलद मरगया । उसके गोद लिये लड़के नान्हाराव ने आठ-लाख का पिंशन जो सन् १८१८ में बाजीराव को दिया गया था अपने नाम बहाल चाहा ॥ यह क्योंकर होसकता था । पिंशन तो हीनहयात था ॥ नान्हा ने विलायत मुख़्तार भेजा । यहां और विलायत दोनों जगह से उसका दावा डिसमिस हुआ ॥

---

* राजा अपने इख़्तियार की बहाली बराबर चाहता रहा और जो जो गवर्नर जेनरल हुए सब की तरफ़ से बहाली क्या लड़का गोद लेना और नाम की रियासत का वारिस बनाना भी नामंज़ूर होता रहा लेकिन सन् १८६६ में सेक्रेटरी आफ़ स्टेट ने दोनों बातों को मंज़ूर करलिया लड़का अभी (१८७०) नाबालिग़ है जब बालिग़ होकर इस के लाइक़ समझा जायगा इख़्तियार बहाल होजायगा ॥

अब कुछ हाल अवध की ज़ब्ती का सुनो यह भारी काम लार्ड डलहौसी का गोया आख़िरी था। सन् १७७६ ही में वारन हेस्टिंग्ज़ ने नव्वाब आसिफ़ुद्दौला को रअ़य्यत की तबाही और बद इन्तिज़ामी से चिताया था॥ लार्ड कार्नवालिस और सरजान शोर भी चिताता रहा। यहां तक कि जब अंगरेज़ों की मदद से सआदतअ़लीख़ां नव्वाब हुआ लार्ड विलिज़्ली ने सन् १८०१ में इस बात का कि रज़ीडंट की सलाह मुताबिक़ इन्तिज़ाम दुरुस्त करे एक अ़हदनामा लिखवालिया॥ तीस बरस बाद लार्ड बेंटिंक को बख़ूबी मालूम होगया कि बे मुदाख़लत काम न चलेगा। कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स से इजाज़त हासिल कर के नसीरुद्दीनहैदर को धमकाया कि अब इख़्तियार छिन कर पिंशन मुक़र्रर होजायगा॥

इस धमकी से कुछ बहुत काम नहीं निकला। लार्ड आकलैंड और ज़ियादा ज़रूरी मुहिम्मों में फंसा रहा॥ सन् १८४६ में यानी पहली पंजाब की लड़ाई ख़तम होने पर गवर्नमेंट ने फिर अवध की तरफ़ तवज्जुह की। और रअ़य्यत की तबाही और परेशानी की ख़बर ली॥ लार्ड हार्डिंग ख़ुद लखनऊ गये और बादशाह * को ज़ुबानी समझाया। और फिर जल्द ही सन् १८५१ में लार्ड डलहौसी ने कर्नल स्लीमन को वहां का रज़ीडंट मुक़र्रर किया॥ और हुक्म दिया कि बिल्कुल इलाक़े में दौरा करके अपनी आंखों से रअ़य्यत की हालत देखे। और वहां के इन्तिज़ाम का रिपोर्ट करे॥ रिपोर्ट आया। लेकिन उस से बदतर होना मुमकिन न था॥ गोया दुन्या के ज़ुल्म और ज़ियादतियों की फ़िहरिस्त थी। रअ़य्यत की तबाही और परेशानी से भरी थी॥ बादशाह ऐश में डूबे हुए थे॥ अदालत के मालिक गवैये बजवैये थे॥ उ़हदेदार अपने उ़हदे नज़राना देकर मोल लेते थे। और फिर रअ़य्यत को लूट कर अपनी जेब भरते थे॥ तोभी लार्ड डलहौसी ने
१८५४ ई० ज़ब्ती मुल्तवी रक्खी। और सन् १८५४ में जेनरल ऊटरम को

* बादशाह का ख़िताब मिलने का हाल ऊपर लिख आये हैं॥

रज़ीडंट मुक़र्रर करके नये सिर से तहक़ीक़ात का हुक्म दिया जिस से मालूम हो कि कर्नल स्लीमन के रिपोर्ट पर बादशाह ने इन्तिज़ाम की क्या दुरुस्ती की। जेनरल उटरम ने ख़ूब तहक़ीक़ करके बहुत अफ़सोस के साथ लिखा कि दुरुस्ती कुछ भी नहीं हुई है। ग़ोर न होने की कुछ उमेद है। लार्ड डलहौसी ने देखा कि अब चुप रहना गुनाह में दाख़िल होगा कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स को लिख भेजा कि बादशाह बना रहे। लेकिन दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार ले लिया जावे। जेनरल ले० जो कर्नल स्लीमन से पहले रज़ीडंट थे। अब कौंसल में भरती होगये थे। सब मिम्बरों ने लार्ड डलहौसी की राय से इत्तिफ़ाक़ किया। लेकिन दो मिम्बरों ने सिवाय ज़बती के और किसी तदबीर में कुछ फ़ाइदा न देखा। दो महीने के कामिल ग़ोर बाद कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स ने बोर्ड आफ़ कंट्रोल की मंज़ूरी के साथ ज़बती का हुक्म लिख भेजा बादशाह को १८५६ ई० पंद्रह लाख पिंशन दिया। बादशाह ने अपना डेरा कलकत्ते में जा किया।

कम्पनी की सनद में जो मीआद गुज़रने पर सन् १८५३ में नयी मिली। नयी बात तीन दर्ज हुई। पहले यह कि कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स के मिम्बरों की तादाद तीस से अठारह होगयी। उस में भी छ की मुक़र्ररी शाही अहलकारों के इख़्तियार में रही। दूसरे बंगाले और पंजाब का एक एक लेफ़्टिनेंट गवर्नर जुदा मुक़र्रर हुआ। तीसरे सिविल सर्विस के लिये इम्तिहान का क़ाइदा मुक़र्रर होकर उस पर से कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स का इख़्तियार उठ गया।

लार्ड केनिंग

ग़रज़ लार्ड डलहौसी अपनी मीआद ख़तम होने पर विलायत चले गये। और यहां उन की जगह पर लार्ड केनिंग आये।

अब मुख़्तसर सा कुछ हाल बलवे का लिखते हैं। अंगरेज़ लोग अब तक इस के असली सबब पर बहस करते हैं। उन को शायद इस से बढ़ कर कभी कोई तअज्जुब न हुआ होगा

ज़ोर हुआ ही चाहे। जिन के मुल्क इंगलैंड में ज़ियादा आदमी एक ही क़ौम ज़ोर एक ही मज़हब के बसते हैं क़ानून मुताबिक़ वकालतन् बादशाही करते हैं अपने मुल्क के लिये जान देने को तयार रहते हैं औरतें भी मुल्कदारी के मुआमलों में दख़ल देती हैं गोया सो स्याने एक मत की मसल पर चलते हैं वह क्यों न इस बात से तग़ल्लुब में आवें कि सिर्फ़ एक चिकनाई लगे कारतूस काम में लाने के हुक्म से बंगाले की सारी फ़ौज बिगड़ जावे। वह फ़ौज जो सैकड़ों लड़ाइयों में सर्कार के नमक की शर्म बचा लायी ज़ोर अपने अफ़सरों को मा बाप समझती रही अब उन्हीं अफ़सरों का गला काटे। फ़ौज के बिगड़ते ही सारे हिंदुस्तान में खलबली पड़ जावे। बदमआश हर तरफ़ लूट मार मचा देवें। रईस अमीर जो अंगरेज़ों के बढ़ाये बढ़े ज़ोर जिन के भुलाये अंगरेज़ आये कुछ परवा न करें बल्कि जिन को ऐसे वक़्त में सर्कार के लिये जान मान सब निछावर करना चाहिये था बहुतेरे उन में से अलग रहकर तमाशा देखा करें। लेकिन हम लोगों के लिये इस में कोई तग़ल्लुब की बात नहीं है फ़ौज में तो सिपाहियों को यक़ीन हो गया था कि इस तरह पर कारतूसों के काम में लाने का हुक्म जान बूझकर सिर्फ़ उनकी जात लेने के लिये दिया गया है। उन नये कारतूसों में इस लिये कि बंदूक़ की नली में फंस न रहें चर्बी की चिकनाई लगायी जाती थी ज़ोर चर्बी का छूना हिन्दुओं को मना है। ये बेसमझे सिपाही इतना कहां सोच सकते थे कि यह कारतूस दूसरी तरह पर भी काम में आ सकता है जिस में उनकी जात न जावे। ज़रूर कुछ लिहाज़ होगा अगर अच्छी तरह इन मुश्किलों की ख़बर सर्कार तक पहुंचाई जावे। सिपाहियों ने समझा कि बड़ी बे इज़्ज़ती हुई। ग़रज़मंद ज़ोर मतलबी सारों ने उनको ज़ोर भी भड़काया कि यह उनकी बे इज़्ज़ती जान बूझ के की गयी। निदान देखते ही देखते यह बलवे की हवा सारे हिंदुस्तान में फैली बिरली ही छावनियां तो इसके ज़हर से बची रहीं

बाक़ी सब में सिपाहियों ने आफ़त मचायी ॥ जब सिपाही बिगड़े तो फिर बदमआशों का उभड़ना क्या तअज्जुब है । हाकिम का डर न रहने से लूट मार में कौन सा तरद्दुद है ॥ जब ऊंची जातवाले सिपाहियों ने मेरट में अपने अफ़्सरों पर गोली चलाकर जेलखाना खोल दिया । तो गूजरों का क्या क़ुसूर है जिसकी लाठी उसकी भैंस सब ने इसी पर अमल किया ॥ और अगर पूछो कि शरीफ़ों ने रईसों ने बड़े आदमियों ने बलवा दबाने में सर्कार को मदद क्यों नहीं दी । तो हम यही कहेंगे कि इन में ऐसी हिम्मत और बहादुरी किसने पायी ॥ भला यह बनिये महाजन लाला बाबू हथियार चलाने लाइक़ हैं ? बनज बेवपार रुपये पैसे का काम जो चाहो इन से ले लो ॥ राजा महाराजा अपने इलाक़ों की आमदनी ऐश आराम में ख़र्च करते हैं हिफ़ाज़त का भरोसा सर्कार पर रखते हैं जुलूस के लिये कुछ सवार पियादे रख लिये तो क्या वह सर्कार के क़वाइद सीखे सिपाहियों से लड़ सकते हैं ज़रा ग़ौर करो ॥ ये लोग अपनी ही जान बचाने की फ़िक्र में पड़ गये थे । हां सर्कार की फिर सल्तनत जमने की दुआ दिल से मांगते थे ॥ सिवाय इसके "लायलटी" यानी सर्कार की ख़ैरख़्वाही के मानी में फ़रंगिस्तान और हिंदुस्तान के दर्मियान बड़ा फ़र्क़ है जिसके नाम की डौंड़ी पिटे उसका हुक्म मानना यही यहां की ख़ैरख़्वाही है । सैकड़ों बरस से जो बादशाहियों का उलट पुलट देखा किये हैं अब उसकी परवा ही नहीं है ॥ पठान मुग़ल मरहठों के ज़ुल्म ज़ियादती ने इन को ऐसा बिगाड़ दिया । कि "पेट्रिआटिज़्म" के लिये हम को यहां की बोली में कोई लफ़्ज़ ही नहीं मिला ॥ इन के ख़याल ही में वह आज़ादी नहीं आ सकती जिसके लिये अंगरेज़ों ने स्टुआर्ट के ख़ानदान को तख़्त से उतारा । न वह इटालीवालों की ख़ुद मुख़्तार होने की ख़ुशी या जर्मनीवालों की क़ौमी हमदर्दी इनके ख़याल में आस-कती है जिस से वह मुल्क एक होकर ऐसी बड़ी "इमपायर" यानी शाहन्शाही बन गया ॥

ग़रज़ यह सन् १८५७ के बलवे की जड़ सिर्फ़ हिंदुस्तानी फ़ौज का बिगड़ जाना है कि जिस का बलाव उस वक़्त विलायती यानी गोरों की फ़ौज यहां कम रहने के सबब जैसा चाहिये तुर्त न हो सका। और बग़ावत के मानी तो कुल इतने ही लग सकते हैं कि बदमआश और मुफ़्सिदों को जैसे अंधे के हाथ बटेर लग जाय मन मानता मौक़ा मिल जाने से ग़दर मच गया॥

अब कुछ थोड़ा थोड़ा सा हाल इस बलवे के बड़े बड़े
१८५७ ६० हंगामों का लिखा जाता है बाईसवीं जनवरी सन् १८५७ को कलकत्ते के पास दमदमे में जहां तोपख़ाना और फ़ौज रहती है सत्तरहवीं हिंदुस्तानी पल्टन के कमान अफ़सर (कमांडिंग अफ़िसर) को मालूम हुआ कि सिपाही लोग यह अफ़्वाह सुनकर कि कारतूसों में गाय और सूअर की चरबी लगी है निहायत भड़क गये हैं और बड़ इस अफ़्वाह की यह बतलाते हैं कि तोपख़ाने के किसी ख़लासी ने वहां किसी सिपाही से पानी पीने को लोटा मांगा जब सिपाही ने अपना लोटा देने से इन्कार किया तो ख़लासी ने कहा "तेरे हमको लोटा देने से तो तुम्हारी जात जाती है। लेकिन जब गाय और सूअर की चरबी मले कारतूस दांत से काटोगे तब देखेंगे तुम्हारी जात क्या होती है"॥ सिपाहियों से यह भी मालूम हुआ कि इस तरह की ख़बर तमाम हिंदुस्तान में फैल गयी है। और अब छुट्टी लेकर घरजाने पर घरवाले काहे को साथ खायें पीयेंगे यह बड़ी दहशत लगी है॥ इस बात की तहक़ीक़ात हुई और उसी महीने की सत्ताईसवीं को गवर्नर जेनरल ने हुक्म देदिया कि चरबी की जगह जो सर्कारी मेगज़ीनों में लगायी जाती थी सिपाही ख़ुद बाज़ार से तेल और मोम ख़रीद कर अपने हाथ से कारतूसों में लगा लेवें पंजाब को भी यही हुक्म भेजा गया। लेकिन अफ़्सोस है कि न गज़ट में छापागया और न तमाम छावनियों में फ़ौज को समझाया गया॥

यह हवा दमदमे से बहरामपुर पहुंची। वहां उन्नीसवीं हिंदुस्तानी पल्टन थी॥ उन्नीसवीं फ़रवरी को रात के वक़्त

परेड पर जमा हुई। कमान अफ़सर १८० सवार और दो तोपें लेकर आया सिपाहियों ने कहा कि साहिब यह सुनकर कि हम लोगों से ज़बर्दस्ती कारतूस कटवाने को गोरे बुलवाये गये हैं बड़ा डर पैदा हुआ है कर्नल मिचिल ने समझाया कि अब कारतूस दांत से नहीं काटने पड़ेंगे हाथ से तोड़ कर बंदूक़ में भरे जावेंगे पलटन अपनी लैन को चली गयी। लार्ड केनिंग ने इस ख़याल से कि दूसरी पलटनें भी उन्नीसवीं का तरीक़ा न इख़्तियार करें उन्नीसवीं पलटन को कलकत्ते के पास बारकपुर की छावनी में बुलवाकर उसका नाम कटवा दिया। इसी के बाद वहां बारकपुर में चौंतीसवीं पलटन के किसी सिपाही ने अपने किसी अफ़सर पर चोट चलायी उसके साथियों ने उसे गिरफ़्तार तक न किया। सज़ा में इस चौंतीसवीं पलटन की भी सात कम्पनियों का नाम काटा गया। और दो आदमियों के लिये फांसी का हुक्म हुआ। सत्तरहवीं के दो आदमी काले पानी भेजे गये। गवर्नमेंट का इरादा था कि इस तरह पर झटपट सज़ा देदिला कर सरकशी दबादेवे लेकिन सिपाही उलटे और भी बिगड़ गये। पांचवीं मई को मेरट में तीसरे रिसाले के पचासी सवारों ने कारतूस काम में लाने से इन्कार किया। और नवीं को कोर्टमार्शल से उन्हें सख़्त मिहनत के साथ जुदा जुदा मीआद की क़ैद का हुक्म मिला। दूसरे ही दिन तमाम हिंदुस्तानी फ़ौज ने जो उस वक़्त वहां छावनी में थी यानी उस रिसाले के साथ दो पलटनों ने मिलकर बलवा किया। क़ैदियों को जेलख़ाने से निकाल दिया। अपने अफ़सरों पर गोली चलायी। छावनी में आग लगायी। फ़रंगी जो हाथ लगे सब को मार डाला। न औरत न बच्चा उन पापियों के हाथ से बचा। और तअज्जुब यह कि बारेक में गोरों की फ़ौज वहां मौजूद थी लेकिन कमान अफ़सर ने कुछ हाथ पैर न हिलाया। तमाम बलवाइयों को मज़े से दिल्ली चले जाने दिया। इन्हों ने दिल्ली में भी वही मेरट का सा हाल किया। शाहआलम के पोते बहादुरशाह को जो वहां क़िले में गवर्नमेंट से पिंशन पाता था

बादशाह बनाया ॥ बलवाई अपने जोश में बावले बन गये थे। भला बुरा या वाजिब ग़ैर वाजिब कुछ नहीं देखते थे ॥ दिल्ली में गोरों की फ़ौज नथी। यही बड़ी आफ़तों की जड़ हुई ॥ बहुतेरे मुसल्मान दिल्ली की बादशाही फिर क़ाइम होना चाहते थे। वे ईसाइयों की हुकूमत से निकल कर फिर पुराने अंधे घोड़े ख़िताब और बड़ी बड़ी जागीरों के मिलने का ऐसे वक़्त में पूरा भरोसा रखते थे बाज़े अक़्ल के पूरे हिंदू भी उनके शामिल होगये ॥ निदान देखते ही देखते यह बलवे की आग ऐसी फैली। कि एक दफ़ा तो गोया दुआब अवध और रुहेलखंड से सिवाय मेरट की छावनी लखनऊ की रज़ीडंटी और आगरे और इलाहाबाद के क़िले के बिल्कुल अंगरेज़ी अमल्दारी ही उठगयी ॥ कान्हपुर में सिपाहियों ने पांचवीं जून को बलवा किया। और नान्हाराव को अपना सर्दार बनाया ॥ नान्हा को सर्कार से अपना बदला लेने का यह अच्छा मौक़ा मिला। जेनरल ह्वीलर बारकों में मोरचे लगाकर सात सौ अंगरेज़ों के साथ कि जिसमें ज़ियादा मेम बच्चे और न लड़ने वाले साहिब लोग थे बंद हुआ ॥ बाईस दिन तक बड़ी बहादुरी के साथ लड़कर जब खाने और लड़ने का सामान न रहा जान की अमान का क़ौल क़रार लेकर सबने अपने तईं नान्हा के हवाले कर दिया। उस कमबख़्त ने सब को कटवा डाला मेम और बच्चों का भी कुछ ख़याल न किया ॥ नव्वाब तफ़ज़्ज़ुल हुसैनख़ां की बग़ावत के सबब जो साहिब लोग फ़तहगढ़ (फ़र्रुख़ाबाद) से निकल आये थे उनको भी इस ने मारडाला। जो मेम और बच्चे बच रहे थे जुलाई में सर्कारी फ़ौज पास पहुंच ने पर उन सब बेचारों की गर्दन मारी ॥ सिर्फ़ दो साहिब इस के हाथ से बच निकले। गोया इस मुसीबत की कहानी सुनाने को जीते रहे ॥

अवध की फ़ौज जून के शुरू ही में बिगड़ गयी। और बादशाह बेगम और उसके लड़के बिर्जीसक़दर के नाम से फिर पुरानी नव्वाबी चमकी ॥ तअल्लुक़ेदारों का ज़ोर ज़ुल्म अंगरेज़ी अमल्दारी में दबा रहा। अब बिर्जीसक़दर के [illegible]डे तले फिर

सिर उठाने का अच्छा मौक़ा पाया । सर हेनरी लारेंस रज़ीडंटी यानी बेलीगारद में अंगरेज़ों के साथ बंद हुए । कुछ उन में लड़ने वाले थे और कुछ न लड़ने वाले ।

रुहेलखंड को नव्वाब ख़ां बहादुर ख़ां ने दबाया । मऊ नीमच नसीराबाद की फ़ौजें और हुलकर और सेंधिया के कंटिंजेंटों ने भी बलवा मचाया । झांसी की रानी और बांदे के नव्वाब ने बुंदेलखंड पर क़बज़ा किया । दिल्ली तो गोया बलवे का मर्कज़ था जो फ़ौज जहां बिगड़ी सब ने सीधा दिल्ली का रस्ता लिया ।

जैसा बड़ा बलवा हुआ । वैसा ही लार्ड केनिंग भी बड़ा गवर्नर जेनरल था । तुर्त मंदराज और बम्बई से फ़ौजें इधर को रवाना कराईं । जो गोरों की पल्टनें चीन को जाती थीं रास्ते ही से सब यहां मंगालीं । लेकिन सर्कार का बड़ा सहारा पंजाब था । सरहद होने के सबब और जगहों से वहां गोरों की फ़ौज ज़ियादा थी सर जान लारेंस * को जिन हिंदुस्तानी पल्टनों की नमकहलाली और वफ़ादारी का भरोसा न हुआ तुर्त सब से हथियार रखवा लिया ।

कमांडर इन चीफ़ ने सात हज़ार फ़ौज † से आठवीं जून को दिल्ली की पहाड़ी पर मोरचा जा जमाया । बलवाइयों का ज़ोर था धीरे धीरे मुहासरा बढ़ा के चौदहवीं सितम्बर को धावा कर दिया । क़दम क़दम पर लड़ाई हुई और लहू बहा । यहां तक कि [illegible] का क़िला भी हाथ आगया और दिल्ली में

---

* एक रोज़ शिमला में मुझे कुछ काग़ज़ पढ़ने के लिये बुलाया जब काम होगया ख़ुशी में आकर फ़र्माने लगे तू जानता है हम को ये अफ़ग़ानी क्या कहते हैं अर्ज़ किया हुज़ूर नहीं बोले ज़बर्दस्त जान लारेंस ! इस में किसी तरह का शक नहीं कि वह सच मुच ज़बर्दस्त थे ।

† ज़ियादा इस फ़ौज में गोरे थे और पंजाब से लिये गये थे लेकिन हिंदुस्तानियों में सिरमौर वाली गोरखों की पलटन और गाइड कोर ने बड़ा नाम पाया ।

फिर सर्कारी अमल हुआ। आदमी दोनों तरफ़ के बहुत काम आये। शायद सन् १७३९ की नादिरशाही में भी शहर के अंदर इस से बढ़ कर नहीं मारे गये। बहादुरशाह क़ुनबे समेत क़ैद किये गये। और रंगून जाकर कुछ दिनों बाद उसी क़ैद में मरे।

जुलाई के शुरू में जेनरल हेवलाक साहिब दो हज़ार आदमी और कुछ तोपें लेकर कान्हपुर और लखनऊ लेने को चले। बारहवीं और पंद्रहवीं को नान्हा की फ़ौज फ़तहपुर और पांडु नदी से भगा कर सत्रहवीं को कान्हपुर में दाख़िल हुए। लेकिन लखनऊ में बेलीगारदवालों को चौबीसवीं सितम्बर तक मदद न पहुंचा सके। नवीं नवम्बर को नये कमांडर इन चीफ़ सर कालिन कैम्बल तीन हज़ार आदमियों के साथ लखनऊ जाकर बेलीगारदवालों को कान्हपुर निकाल लाये। बाग़ी और बलवाई सब देखते के देखते ही रहगये। जेनरल ऊटरम को कुछ फ़ौज के साथ लखनऊ के बाहर आलमबाग़ में छोड़ आये थे। कान्हपुर में एक भारी लश्कर
१८५८ ई० इकट्ठा करके मार्च सन् १८५८ के शुरू में फिर लखनऊ गये। एक हफ़्ते की बड़ी कड़ी लड़ाई के बाद सोलहवीं को लखनऊ हाथ आया। महाराज सरजंगबहादुर ने जो अपने गोरखों की फ़ौज लेकर नयपाल से मदद को आये थे अच्छा काम दिखलाया। बेगम और बिर्जीसक़दर नान्हा समेत तराई की तरफ़ भागे। और फिर न सुनायी दिये।

निदान दिल्ली और लखनऊ के हाथ आने से बलवा ख़तम हुआ। और जब उधर रुहेलखंड भी ले लिया और इधर झांसे को सर ह्यूरोज़ ने साफ़ किया सब जगह अमन चैन हो गया।

पर विलायत में पार्लामेंटवालों की यह राय ठहरी कि अब हिंदुस्तान की हुकूमत कम्पनी से ले ली जाय सच है पैदा करनेवाले मालिक को जो कुछ काम इस कम्पनी से लेना था वह पूरा हो चुका। देखो पलासी की लड़ाई से इस सौ बरस के अंदर सर्कार कम्पनी बहादुर ने क्या क्या काम कर दिखलाया और हमारे हिंदुस्तान के मुलक को कहां से कहां पहुंचाया।

जिस ज़मीन में लोग गाय भी नहीं चराते थे वहां अब सुन्दर खेतियां होती हैं। जहां ज़मींदार नित बाक़ी मालगुज़ारी की इल्लत में पकड़े बांधे जाते थे वहां अब पक्के बन्दोबस्त की बदौलत क़िस्त ब क़िस्त मालगुज़ारी अदा कर के पांव फैलाये सोते हैं। जिन रास्तों में बकरी का गुज़र न था वहां बग्गियां दौड़ती हैं। जहां अशर्फ़ियों को बहली मयस्सर न थी वहां आनों पर रेलगाड़ियां हाज़िर हैं। जहां क़ासिद नहीं चल सकता था वहां तार की डाक लग गयी है। जहां क़ाफ़िलों की हिम्मत नहीं पड़ती थी वहां अब एक एक बुढ़िया सोना उछालती चली जाती है। जहां हज़ारों की तिजारत होती थी वहां करोड़ों की नौबत पहुंच गयी है। जिन्हें दिन भर मज़दूरी करने पर भी पाव भर सत्तू या चना मिलना कठिन था उनकी उजरत अब चार आने रोज़ और आठ आने रोज़ से कम नहीं है। जिन किसानों की कमर में लंगोटी दिखलायी नहीं देती थी उनकी घरवालियां गहने झमकाती फिरती हैं क्या पुल और क्या नहर क्या मुसाफ़िरख़ाने और क्या दारुश्शिफ़ा क्या पुलिस और क्या कचहरी क्या इंसाफ़ और क्या क़ानून क्या इल्म और क्या हुनर क्या ज़िंदगी का ज़रूरी असबाब और क्या ऐश का सामान जो कुछ इस कम्पनी के राज में देखा गया न पहले किसी के ख़याल में आया था न आज तक कहीं सुना गया। गोया जंगल पहाड़ झाड़ झंखाड़ से इस देश को बाग़ हमेशाबहार बना दिया। क्या महिमा है अपरम्पार सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि

इंगलिस्तान के जिन सौदागरों ने और दूकानदारों ने कम्पनी बन कर अपने बादशाह से हिंदुस्तान में तिजारत करने की सनद ली। आज उन्हों ने इस सारे हिंदुस्तान "जन्नत निशान" ख़ुलासे जहान की पूरी सल्तनत अपने बादशाह शाहन्शाह क़ैसर-हिंद एमप्रेस विकटोरिया को (ईश्वर दिन दिन बढ़ावे प्रताप उसका) नज़र की। दूसरी अगस्त १८५८ को पार्लामेंट ने यह हुक्म दिया कि अब आगे को ईस्ट इंडिया कम्पनी के साझी हिंदुस्तान से कुछ इलाक़ा न रक्खें। जो कुछ उनका रुपया

लगता है उसका मूद ख़ज़ाने से ले लिया करें ॥ बादशाही हिंदुस्तान में बादशाह की रहे। यह भी खुश नसीबी हिंदुस्तान की थी सौदागरों के तहत से निकल कर ख़ास बादशाह के तहत में आया काले आदमी भी एम्परेस विक्टोरिया के ख़ास रअय्यत कहलाये ॥ कोई मुसल्मान बादशाह होता इस बलवे के बाद यहां क़त्ल आम और शहरों को ढाह कर गधे का हल चलाने के लिये हुक्म देता। लेकिन कृपानिधान दयावान क्षमासागर जगतउजागर श्रीमती महारानी एम्परेस विक्टोरिया ने जो इश्तिहार भेजा और पहली नवम्बर को लार्ड कैनिंग गवर्नर जेनरल ने आप पढ़कर इलाहाबाद में सब लोगों को सुनाया उसके सुनने से सारी प्रजा का मन कमल की कली सा खिल गया ॥ उसकी नक़ल नीचे लिखी जाती है ये पढ़नेवालो अपने पैदा करनेवाले मालिक से यही दुआ मांगो कि हमारी एम्परेस विक्टोरिया क़ैसर हिंद की सल्तनत लाज़वाल होवे। और ऐसी रअय्यत पर्वर शहन्शाह हम लोगों के सिर पर सदा बनी रहे ॥

इश्तिहार

(जैसा पहली नवम्बर १८५८ ई० के गवर्नमेंट गज़ट में छपा है)

श्री महारानी का कौंसल के इजलास में हिंदुस्तान के रईस और सर्दार और सब लोगों के लिये ॥

श्री महारानी विक्टोरिया ईश्वर की कृपा से रानी ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैन्ड और उन सब देशों की जो यूरप और एशिया और अफ़रीका और अमरीका और आस्ट्रेलेशिया में उन के आधीन हैं और स्वमत प्रतिपालक ॥

ज्योंकि कई तरह के भारी सबबों से हमने धर्म सम्बन्धी और राज्य सम्बन्धी प्रधानों और प्रजा के मुख़तारों की जो पार्लामेंट में जमा हुए सलाह और मंज़ूरी के साथ इरादा किया है कि हिंदुस्तान के मुल्क का बंदोबस्त जो हम ने आज तक अनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी को अमानत सौंप रक्खा था अपने अधिकार में लावें ॥

इसलिये अब हम इश्तिहार देते हैं और प्रगट करते हैं कि ऊपर लिखी हुई सलाह और मंज़ूरी के बमूजिब उक्त अधिकार अपने हाथ में ले लिया और इस इश्तिहार की रू से अपनी सब प्रजा को जो उस मुल्क में हैं ताकीद फ़र्माते हैं कि हमारे और हमारे वारिस और जानशीनों के साथ वफ़ादारी और सच्ची तावेदारी करें और जिस किसी को हम अपने नाम और अपनी तरफ़ से अपने उस मुल्क के बंदोबस्त के लिये वक़्त व वक़्त आगे मुक़र्रर करना मुनासिब समझें उसका हुक्म मानती रहें ॥

और क्योंकि फ़र्ज़न्द अर्जमन्द और मोतबर सलाहकार चार्लस जान वेकोंट केनिंग साहिब बहादुर की वफ़ादारी लियाक़त और समझ पर हमको ख़ास करके पूरा भरोसा और दिलजमई हासिल है इसलिये उक्त वेकोंट केनिंग साहिब बहादुर को हमारे उस मुल्क का बंदोबस्त हमारे नाम से और उमूमन् सब काम हमारी ओर और हमारे नाम से करने के लिये हमारे उन सब हुक्म और क़ानूनों के बमूजिब जो हमारे किसी बड़े वज़ीर की मारिफ़त उसके पास वक़्त व वक़्त पहुंचें हमने उस मुल्क का अपना पहला वेसराय अर्थात् क़ाइम मुक़ाम और गवर्नर जेनरल मुक़र्रर फ़र्माया ॥

और जो सब लोग कि अब किसी उहदे पर क्या मुल्की और क्या फ़ौजी सर्कार अनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी की नौकरी में दाख़िल हैं इस इश्तिहार की रू से हम उन सब को अपने उहदों पर बहाल और क़ाइम रखते हैं लेकिन वह सब लोग हमारी आयन्दा मर्ज़ी और उन सब आईन और क़ानूनों के ताबे रहेंगे जो इसके बाद जारी किये जावें ॥

और हिंदुस्तान के रईस और सर्दारों को हम इत्तिला देते हैं कि जो क़ौल क़रार और अहदनामे अनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने उनके साथ किये हैं या उसकी इजाज़त से किये गये हैं हम उन सब को क़बूल और मंज़ूर फ़र्माते हैं और बहुत इहतियात से बहाल और बर्क़रार रक्खेंगे और उमेद है कि उन

सब रईस और सर्दारों की ओर से भी वैसा ही लिहाज़ रहेगा ॥

जो सब मुल्क कि अब हमारे क़ब्ज़े में हैं हम उन्हें बढ़ाना नहीं चाहते और जब कि हम वैसा न होने देवेंगे कि दूसरे लोग हमारे मुल्क या अधिकारों पर निःशंक हाथ बढ़ावें तो हम भी दूसरों के मुल्क या अधिकारों पर हाथ बढ़ाये जाने की इजाज़त न देवेंगे हम हिंदुस्तान के रईस और सर्दारों के अधिकार और दर्जे और उनकी प्रतिष्ठा वैसी ही समझेंगे जैसी अपनी समझते हैं और हमारी इच्छा है कि वे सब और हमारी अपनी प्रजा भी उस बढ़ती और चाल चलन की दुरुस्ती को हासिल करें कि जो केवल मुल्क में सुलह और अच्छा बंदोबस्त रहने से हो सकती है ॥

जो काम कि हमको अपनी और सब प्रजा के वास्ते करने उचित और कर्तव्य हैं वही हिंदुस्तानवालों के लिये भी हम अपने ऊपर वाजिब समझेंगे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कृपा से उन सब कामों को वफ़ादारी के साथ सच्चे दिल से करते रहेंगे ॥

यद्यपि हम को ईसाई मत के सच्चे होने का दृढ़ निश्चय है और उस मत से जो तसल्ली कि हासिल होती है उस को हम शुकरगुज़ारी के साथ स्वीकार करते हैं तथापि न अपना हम इस बात में अधिकार समझते हैं और न हमको इस बात की इच्छा है कि ज़बर्दस्ती अपनी प्रजा को भी उसका निश्चय दिलावें यह हमारा बादशाही हुक्म और मर्ज़ी है कि न किसी की उसके मत के कारन पक्ष की जावे और न किसी को उसके कारन तकलीफ़ दी जावे बरन सब लोग बराबर एक ही तौर पर बिना पक्षपात क़ानून के बमूजिब रक्षा पावें और जो लोग कि हमारे तहत में हुकूमतियार रखते हैं हम उनको बड़ी ताकीद से हुक्म देते हैं कि वे हमारी किसी प्रजा के मत के निश्चय और पूजा में कभी कुछ दस्तन्दाज़ी न करें नहीं तो उन पर हमारा अत्यन्त कोप होगा ॥

और यह भी हमारा हुक्म है कि जहां तक बन पड़े हमारी प्रजा को चाहे जिस बात और चाहे जिस मत की

क्यों न हो उनकी विद्या योग्यता और दियानतदारी के बमूजिब जिन उहदों का काम कि वे हमारी नौकरी में अन्जाम दे सकें उनको बे रोक टोक और बिना पक्षपात के दिये जावें॥

हिंदुस्तान के लोग धरती के साथ जो उनके पुरखाओं से उनके अधिकार में चली आयी है बड़ी मुहब्बत रखते हैं यह बात हमको बखूबी मालूम है और हमको इस बात का बड़ा लिहाज़ है और हमको मंजूर है कि वाजिबी मुतालबे सर्कारी अदा करने पर उनके उस धरती के सारे अधिकारों की रक्षा करें और हम हुक्म देते हैं कि क़ानून बनाने और जारी करने में हिंदुस्तान के पुराने अधिकार और दस्तूर और रीत रसमों का उमूमन ठीक लिहाज़ रक्खा जावे॥

जो आफ़तें और ख़राबियां कि हिंदुस्तान पर उन फ़सादी लोगों के कर्तब से पड़ी हैं जिन्हों ने झूठी झूठी अफ़वाहों से अपने देशवालों को बहकाकर उन से खुले बन्दों बलवा करवा दिया हमको उनका बड़ा अफ़सोस है हमारी शक्ति तो रणभूमि में उस बलवे के दबाने से प्रगट हो गयी अब हम उन लोगों के अपराध क्षमा करके जो इस ढब से बहकावट में आगये लेकिन फिर इताअ़त की राह पर चलना चाहते हैं अपनी दया प्रगट करते हैं॥

इस विचार से कि अब अधिक ख़ूनरेज़ी न होवे और हमारे हिंदुस्तान के देशों में झटपट अमन चैन हो जावे हमारे वैसराय और गवर्नर जेनरल बहादुर ने एक इलाक़े में जिन सब लोगों ने कि इस दुखरूप बलवे में हमारी सर्कार के विरुद्ध अपराध किये हैं बहुतों को उन में से कईएक शर्तों पर अपराध क्षमा होने की आसा दी है और जिनके अपराध कि क्षमा होने की पहुंच से बाहर हैं उन्हें जो सज़ा दी जायगी वह भी ज़ाहिर कर दी है हम अपने वैसराय और गवर्नर जेनरल का यह काम मंजूर और क़बूल करते हैं और उसके सिवाय नीचे और भी हुक्म ज़ाहिर फ़र्माते हैं॥

सिवाय उन लोगों के जिनके वास्ते साबित हुआ है या अब

साबित हो कि उन्हों ने आप सर्कार अंगरेज़ की प्रजा के क़तल में शराकत की बाक़ी सारे अपराधियों पर हमारी दया होगी क्योंकि जिन्हों ने आप सर्कार अंगरेज़ की प्रजा के क़तल में शराकत की उन पर दया करना इन्साफ़ की रू से मना है॥

जिन लोगों ने क़तल करनेवालों को जान बूझ कर पनाह दी या बलवाइयों के सर्दार और उनके बहकानेवाले बने उनके केवल जीवदान का वादा हो सकता है लेकिन ऐसे आदमियों को वाजिब सज़ा देने में उन सब बातों का जिनके सबब से बहक कर अपनी इताअत से फिर गये पूरा लिहाज़ किया जायगा और उन लोगों के वास्ते जो बिना सोचे विचारे फ़सादियों की झूठी बातों को मानकर गुनहगार बनें बड़ी रिआयत की जावेगी॥

बाक़ी और सभों से जो सर्कार के मुक़ाबले में हथियार बांधे हुए हैं इस इश्तिहार में हम वादा करते हैं कि अब वे अपने घरों को लौट जावें और सुलह के कामों में हाथ लगावें उनके बिलकुल क़ुसूर हमारी निस्बत और हमारी सल्तनत और हमारे मर्तबे की निस्बत बेशर्त माफ़ और दरगुज़र और फ़रामोश कर दिये जावेंगे॥

और हमारी यह बादशाही मर्ज़ी है कि ये रहम और माफ़ करने की शर्तें उन सब लोगों के वास्ते हैं जो पहली तारीख़ जनवरी सन् १८५९ ई० से पहले उनकी तामील करें॥

हमारी यह जी से अभिलाषा है कि जब परमेश्वर की कृपा से हिंदुस्तान में फिर अमन चैन हो जावे तो वहां सुलह के उद्यमों को उन्नति देवें और प्रजा के सुख की चीज़ें बनावें और ऐसा बंदोबस्त करें कि वहां की सारी हमारी प्रजा को लाभ हो उनकी वृद्धि में हमारी शक्ति है उनकी संतुष्टता में हमारी रक्षा है और उनकी शुकरगुज़ारी यही हमको बड़ी प्राप्ति है सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमको और जो लोग कि हमारे तहत इख़्तियार रखते हैं सब को ऐसी शक्ति दे कि जिस से हमारी अभिलाषा हमारी प्रजा की भलाई के लिये भलीभांति परिपूर्ण हो॥

॥ इति ॥